[deX

# श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान

ekMy k

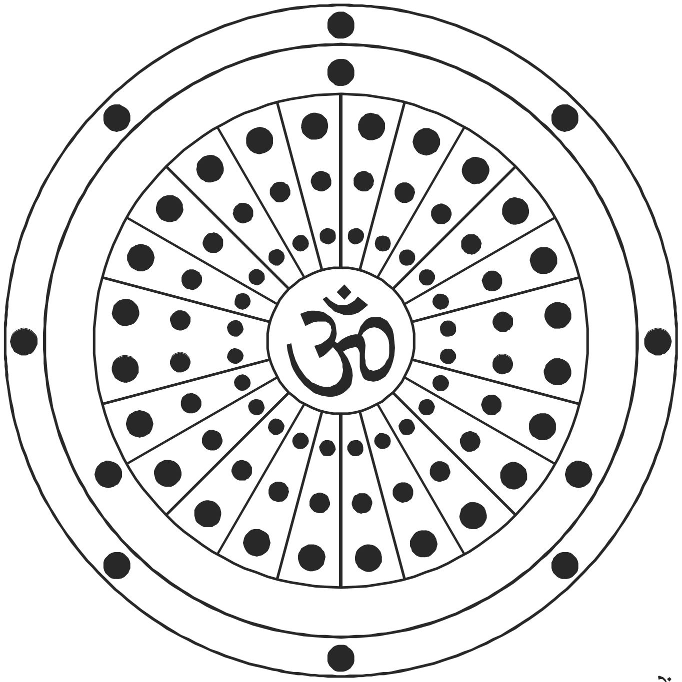


मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 72 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 3 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 8 अर्घ्य
कुल 83 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

Ñfr % fo'kn lEesn f'k[kj pkSchlh fudZ.k{ks=k fo/kku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lgk;d % {kqYyd Jh 105 fo/kkeZ lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh

la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFkku % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZyd¨pUn xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
euhgkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu %0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

eWY; % 51@&#- ek=k

-: अर्थ सौजन्य

श्री आर. के. जैन (पाटनी)

309, वसुन्धरा कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर

मो. 09413008576

eqnzd% ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- %09811374961] 09818394651

E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com



# तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर का महत्त्व

**दोहा– शिखर सम्मेद पावन रहा, शाश्वत तीरथ धाम।**
**जिसकी पूजा कर रहे, करके विशद प्रणाम।।**

भारत में अनेकों तीर्थ भूमियाँ हैं उनमें मृत्युंजयी मुक्तीधाम अपने आप में एक ही अनुपम सबसे निराली निर्वाण भूमि है। जिस मुक्तिधाम पर पहुँचकर अनेकों तीर्थकरों ने मृत्यु को जीतकर निर्वाण पद प्राप्त किया हैं। वह मृत्युंजयी मुक्तिधाम है श्री सम्मेद शिखर जी। जहाँ से अनादिकाल से अनेक तीर्थकरों ने आत्म साधना करके मुक्ति धाम को प्राप्त किया है।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में से बीस तीर्थंकरों ने यहाँ से निर्वाण पद प्राप्त किया है। आज भी उनकी आत्म साधना के वह तपोपूत परमाणु यहाँ विद्यमान हैं। जिनके सन्निकट पहुँचते ही आत्म ध्यान सहज ही लग जाता हैं।

इस पर्वत के नीचे चित्रा नामक भूमि है। 24 तीर्थंकर के 24 निर्वाण सम्बन्धी 24 स्वस्तिक यहाँ पर हैं। इन चिन्हों पर 24 कूटों सहित यह तीर्थराज शाश्वत प्रतिष्ठित है। इस पर्वत के 24 टोकों से अनादिकाल से इस भरत क्षेत्र सम्बन्धी प्रत्येक उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी काल से 24 तीर्थंकर एवं असंख्यात मुनिगण मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त कर चुके हैं एवं आगे भी नियम पूर्वक अनंत काल तक मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त करते रहेंगे।

इसलिए यह तीर्थराज अनादि–निधन एवं सर्वकाल शाश्वत है। हुंडावसर्पिणी कालदोष के कारण 24 तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान, श्री वासुपूज्य भगवान; श्री नेमिनाथ भगवान एवं अन्तिम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान इनको छोड़कर शेष श्री अजितनाथादि 20 तीर्थंकर असंख्यात मुनियों के साथ 12 पूर्व एवं 8 पश्चिम दिशा से अलग–अलग कूटों से मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त कर चुके हैं।

तीर्थराज सम्मेद शिखर के 20 टोकों से 20 तीर्थंकरों के साथ

86 अरब 488 कोटा-कोटी 140 कोटी 1027 करोड़ 38 लाख 70 हजार तीन सौ तेईस मुनि कर्मों को नाश कर मोक्ष पधारे। इसी कारण इस भूमि का कण कण पूज्नीय एवं वंदनीय है। इस महान तीर्थराज की वंदना करने मात्र से नरकगति और तिर्यंच गति छूट जाती है। अर्थात जीव मरकर फिर नरक एवं तिर्यंचगति में जन्म नहीं लेता उसका स्त्रीलिंग का भी छेदन हो जाता है। सभी पापों का संहार करने वाले तीर्थराज की वन्दना महान पुण्य का कारण है। एक बार इस तीर्थ की भाव सहित वंदना करने से 33 कोटी 234 करोड़ 74 लाख उपवास का फल मिलता है। मनोयोग पूर्वक श्री सम्मेद शिखर के दर्शन-वंदन पूजन-विधान आदि करने से सर्व जीवों को सांसारिक सुखों की तो प्राप्ति होती ही हैं कालान्तर में वह स्वर्ग और मोक्ष के भी क्रम क्रम से उत्तराधिकारी बनते हैं।

परम पूज्य साहित्य रत्नाकर **आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज द्वारा रचित श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्माण क्षेत्र विधान** नामक इस पुस्तक में चौबीस तीर्थंकरों की पूजा एवं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रों की कूटों के अर्घ्यों का समावेश किया है। श्री सम्मेद शिखर के भव्य माण्डले की रचना कर सम्मेद शिखर कूटों के अर्घ्य माण्डले पर ही चढ़ाना चाहिए। 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में मोक्ष कल्याणकों के अवसर पर या अन्य पर्व के दिनों में भक्तिभाव से विशेष प्रभावपूर्ण तरीके से यह विधान करके अपने जीवन को सौभाग्यशाली बनाना चाहिए। पुन: गुरुवर के श्री चरणों में त्रिभक्तिपूर्वक नमोस्तु करते हुए इन चार लाइनों से अपनी बात समाप्त करता हूँ।

**''जहाँ पत्थरों पर भी, कलियाँ खिल जाती हैं।**
**जहाँ अंधेरे में भी, गलियाँ मिल जाती हैं॥**
**तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर को, कौन भूल पाएगा।**
**जहाँ सभी की जिन्दगियाँ, बदल जाती हैं॥''**

**संकलन-मुनि विशाल सागर (संघस्थ)**
**जैन मन्दिर, रोहिणी सेक्टर-3, दिल्ली**



# मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

**तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।**
**देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥**
**मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
**विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥**
**मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।**
**विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

**जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।**
**हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।**
**अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।**
**निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।**
**अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।**
**अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।**
**पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।**
**अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥**



**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥7॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।**
**कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।**
**भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥**
**जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।**
**शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
**लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥** शान्तये शांतिधारा...

दोहा-**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
**सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥**
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

## पंच कल्याणक के अर्घ्य

**तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।**
**अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥**

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।**
**पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥**
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।**
**कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥**
ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।**
**स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥**
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।**
**भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥**
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
**देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥**

(शम्भू छन्द)

**गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।**
**तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥**
**विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।**
**उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥**
**रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।**
**भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥**
**चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।**
**चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥**
**वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।**
**जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥**
**अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।**
**एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥**
**अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।**
**सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥**



**आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।**
**जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी॥4॥**
**प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।**
**वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥**
**गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।**
**तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥**
**वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।**
**द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है॥**
**यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।**
**शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥**
**पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।**
**और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥**
**गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।**
**संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥**
**सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।**
**संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥**
**तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।**
**विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥**
**शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।**
**जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥**
**इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।**
**जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥**

दोहा- **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
**शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ॥**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
**मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान॥**

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

# तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र समुच्चय पूजन

### *स्थापना*

**आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।**
**नेमिनाथ ऊर्जयन्त गिरी अरु, महावीर पावापुर ग्राम॥**
**गिरिसम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।**
**तीर्थंकर निर्वाण भूमियों, को हम झुका रहे हैं शीश॥**
**तीन लोकवर्ती जीवों से, जो त्रिकाल हैं पूज्य महान्।**
**विशदभाव से वंदन करके, उर में करते हैं आह्वान॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

### *शम्भू-छंद*

**जग की माया में फंसकर, कई जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।**
**श्री जिनेन्द्र वाणी का अमृत, ग्रहण नहीं कर पाए हैं॥**
**जन्म मृत्यु का रोग मिटे हम, अमृत नीर चढ़ाते हैं।**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिंता ने चिता बना डाला, हम इससे बहुत सताए हैं।**
**चिंतन से चिंता क्षय होवे, संताप नशाने आए हैं॥**
**संसार ताप मिट जाए आज, हम चंदन चरण चढ़ाते हैं।**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय स्वभाव है आतम का, हम भूल उसे पछताए हैं।**
**हमने अनादि से पाया न, अब उसको पाने आए हैं॥**



**अक्षय पद मिल जाए हमें, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्पों की गंध मनोहर है, इससे जगती महकाती है।**
**उस गंध सुगंधी को पाने, जनता सारी ललचाती है॥**
**हो काम वासना नाश पूर्ण, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**सदियों से भोजन बहुत किया, पर भूख नहीं मिट पाई है।**
**प्राणी को बहुत सताती है, यह भूख बहुत दुखदायी है॥**
**मिट जाए क्षुधा का रोग पूर्ण, यह चरुवर सरस चढ़ाते हैं।**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अज्ञान अंधेरा छाया है, सद्ज्ञान दीप न जल पाए।**
**हो जाय नाश मिथ्यातम का, यह दीप जलाकर हम लाए॥**
**अज्ञान तिमिर का हो विनाश, यह मनहर दीप जलाते हैं।**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**आठों कर्मों की माया से, हम सदा सताते आए हैं।**
**आठों अंगों को बाँध रखा, हम उनसे छूट न पाए हैं॥**
**हो अष्ट कर्म का नाश शीघ्र, अग्नि में धूप जलाते हैं**
**निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो किए पूर्व में कर्म कई, वह सभी उदय में आते हैं।**
**फल उनका शुभ या अशुभ सभी, प्राणी इस जग के पाते हैं॥**

अब मोक्ष महाफल पाने को यह, श्रीफल सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– पूज्य क्षेत्र निर्वाण है, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ।।

*तर्ज-पाँचो मेरू असि जिन धाम....*

श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय।।टेक।।

श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय।
महासुख दाय...।।

यह तीरथ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण।
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय...।।

आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीश झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय...।।

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ, तिनके चरण झुकाऊँ माथ।
मन में यही भावना भाय, वह भी मुक्ति वधु को पाय।।
महासुखदाय...।।

वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आये, भक्ति करके हर्ष मनाय।।
महासुखदाय...।।



चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय।।
महासुखदाय...।।

ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय।।
महासुखदाय...।

शम्भू आदि अन्य मुनीश, सिद्ध बने शिवपुर के ईश।
महिमा जिसकी कही न जाय, सिद्ध सुपद पाए जिनराय।।
महासुखदाय...।

पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय।।
महासुखदाय...।

महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारंबार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ति को पाय।।
महासुखदाय...।

पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीव वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय।।
महासुखदाय...।

बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम विशद भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय।।
महासुखदाय...।।

दोहा– पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ती वास हो, वंदन करूँ त्रियोग।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश।।

*(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)*

*मण्डल पर पुष्पाञ्जलिं*

दोहा– तीर्थराज सम्मेद से, पाए मुनि निर्वाण।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करते हम गुण गान।।

*(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)*

# श्री आदिनाथ पूजा-1

स्थापना

**दोहा– धर्म प्रवर्तक जिन हुए, जग में आप महान।**
**आदिनाथ भगवान का, करते हम आह्वान॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

**जो निर्मल नीर चढ़ाएँ, वे तीनों रोग नशाएँ।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन भवताप नशाए, जो भाव से पूज रचाएँ।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत अक्षय पद दायी, इस लोक में गाया भाई।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**सुरभित जो पुष्प चढ़ाएँ, वे काम रोग विनशाएँ।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**नैवेद्य क्षुधा का नाशी, नर पद पाए अविनाशी।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**पूजा को दीप जलाए, वह मोह को जीव नशाए।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**सुरभित जो धूप जलाए, वह आठों कर्म नशाए।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल ताजे सरस चढ़ाए, वह मोक्ष महाफल पाए।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।**
**फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

**दोहा– द्वितिया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान।**
**सर्वार्थ सिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण॥1॥**

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत कृष्ण नौमी प्रभु, पाए जन्म कल्याण।**
**शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान॥2॥**

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग।**
**चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग॥3॥**

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।**
**फागुन वदि एकादशी, जग में हुई महान॥4॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हे कर्म विनाश।**
**मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास॥5॥**

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''कैलाश गिरि'' (अर्घावली)

**श्री कैलाश सिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– आदिनाथ निर्वाण, अष्टापद से पाए हैं।**
**काल दोष यह मान, मोक्ष हुआ जो वहाँ से॥**
**हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान! हे धर्म दिवाकर करुणाकर!।**
**हे तेज पुंज! हे तपोमूर्ति! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर!॥**
**हे धर्म प्रवर्तक! आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।**
**हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, प्रभु भाव सहित करते अर्चन।**
**हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।**
**श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर-नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दशसहस्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।**
**स्वयं बुद्ध हे नाथ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणमण्डित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**इसी कूट से प्रथम तीर्थंकर, मोक्ष जाएँगे और गये।**
**हुण्डकाल में अष्टापद से, आदिनाथ जिन कर्म क्षये॥**



**दश हजार मुनि वृषभनाथ के, साथ में मुक्ती पद पाए।**
**आदिनाथ आदिक मुनियों की, पूजा करने हम आए॥3॥**

ॐ ह्रीं अष्टापद सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।**
**आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल॥**

(पद्धरि छन्द)

**जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।**
**जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय॥1॥**
**जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।**
**सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय॥2॥**
**प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।**
**शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह॥3॥**
**लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।**
**नीलांजना की मृत्यू का योग, पाके छोड़े संसार भोग॥4॥**
**तव नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।**
**प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान॥5॥**
**फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।**
**अष्टापद गाया मोक्ष थान, जो सिद्ध क्षेत्र गाया महान॥6॥**

दोहा– **पुण्य पाप तज के प्रभू, किए आत्म का ध्यान।**
**मोक्ष महल में जा बसे, आदिनाथ भगवान॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **करें वन्दना इन्द्र सौ, चरणों की भगवान।**
**मौका हमको भी मिले, जागे भाव महान॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री अजितनाथ पूजन-2

स्थापना

दोहा– **कर्म विजेता जिन हुए, अजितनाथ भगवान।**
**विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

**नीर चढ़ाते भाव से, रोगत्रय हों नाश।**
**शिवपथ के राही बनें, पाएँ शिवपुर वास॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन लाए श्रेष्ठ हम, घिसकर यह गोशीर।**
**चढ़ा रहे हैं भाव से, पाने भव का तीर॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत लाए श्वेत यह, चढ़ा रहे पद नाथ।**
**अक्षय पद पाएँ प्रभो!, झुका चरण में माथ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।**
**मुक्ती हो संसार से, पायें शिवपुर वास॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**सरस लिए नैवेद्य यह, पूजा करने आज।**
**क्षुधा रोग का नाश कर, पाएँ शिव पद राज॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**दीप जलाते श्रेष्ठ हम, चहुँ दिश होय प्रकाश।**
**यही भावना है विशद, होय महातम नाश॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**धूप जलाने लाए यह, अग्नी में भगवान।**
**अष्ट कर्म का नाशकर, पाएँ पद निर्वाण॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

**फल से पूजा हम करें, आज यहाँ पर नाथ।**
**मोक्ष महाफल प्राप्त हो, झुका चरण में माथ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**आठों द्रव्यों का विशद, लाए बनाके अर्घ्य।**
**अन्तिम है यह कामना, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

**वदी अमावस जेठ की, पाए गर्भ कल्याण।**
**अजितनाथ का देव सब, किए विशद गुणगान॥1॥**

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माघ शुक्ल दशमी प्रभू, अजित नाथ भगवान।**
**न्हवन कराकर मेरु पे, किए इन्द्र जय गान॥2॥**

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माघ शुक्ल दशमी तिथी, पाए तप कल्याण।**
**इस जग का वैभव तजा, किए आत्म का ध्यान॥3॥**

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष शुक्ल एकादशी, पाए केवल ज्ञान।**
**दिव्य देशना दे प्रभू, किए जगत कल्याण॥4॥**

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत शुक्ल की पञ्चमी, पाए पद निर्वाण।**
**सिद्ध लोक में जा बसे, अजितनाथ भगवान॥5॥**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## **''सिद्धवर कूट''** (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– कूट सिद्धवर जान, अजितनाथ भगवान की।**
**इन्द्र किए गुणगान, पाया था निर्वाण जब॥**
**अजितनाथ का साथ मिला है, तब से जीवन चमन खिला है।**
**श्रद्धा का उपवन महका है, संयम से जीवन चहका है॥**
**चहका है जीवन विशद संयम, के बढ़े हम मार्ग पर।**
**शुभ जिंदगी की हर घड़ी अरु, सार्थक हो श्वास हर।**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणकमण्डित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

**प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।**
**पाकर के केवलज्ञान प्रभू, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धवर कूटेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

**एक अरब चौरासी कोटी, लाख पैंतालिस जिन मुनिवर।**
**की पद रज पा धन्य हुआ है, कूट सिद्धवर श्री गिरवर॥**



**फल उपवास कोटि बत्तिस का, तीर्थ वन्दना किए मिले।**
**जिन पूजा वन्दन करने से, जिन जीवों का हृदय खिले॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री एक अरब चतुरशीति कोडी पंचचत्वारिंशत् लक्ष मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

## **जयमाला**

**दोहा– सहज रूप को धार कर, सहज लगाए ध्यान।**
**सहज ज्ञान पाए प्रभू, करते तव गुणगान॥**

(शम्भू छन्द)

**अजितनाथ जिन के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।**
**जित शत्रू के राज दुलारे, विजया माँ के जो नन्दन॥1॥**
**नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गज है जिन का शुभ लक्षण।**
**लाख बहत्तर पूर्व की आयू, हाथ अठारह सौ तुंग तन॥2॥**
**जन्म समय दश अतिशय पाये, दश पाए पा केवलज्ञान।**
**चौदह अतिशय रहे देवकृत, प्रातिहार्य वसु रहे महान॥3॥**
**ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करके नाश।**
**अनन्त चतुष्टय पाय प्रभु जी, कीन्हे अनुपम ज्ञान प्रकाश॥4॥**
**दिव्य देशना देकर प्रभु जी, किए जगत जन का कल्याण।**
**सर्व कर्म को नाश आपने, पाया अनुपम पद निर्वाण॥5॥**
**कूट सिद्ध पर तीर्थराज से, किए मोक्ष को आप प्रयाण।**
**'विशद' भावना भाते हैं हम, होय जगत जन का कल्याण॥6॥**

**दोहा– राही मुक्ती मार्ग के, बने आप भगवान।**
**हमको यह पद प्राप्त हो, दीजे यह शुभ ज्ञान॥**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाए शिव सोपान।**
**अर्चा करके आपकी, जीव करें कल्याण॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री सम्भवनाथ जी पूजन-3

स्थापना

**दोहा– सम्भव जिन समभाव धर, पाए भव से पार।**
**आह्वानन् करते हृदय, बन जाएँ अनगार॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

**क्षीर सिन्धु का जल यह लाए, तीनों रोग नशाने आए।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**सुरभित चन्दन यहाँ घिसाये, भव आतप मेरा नश जाए।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत चढ़ा रहे शुभकारी अक्षय पद पाएँ मनहारी।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प चढ़ाने को हम लाए, काम रोग मेरा नश जाए।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**सरस सद्य नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**पावन दीप जलाकर लाए, मोहनाश मेरा हो जाए।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**धूप जलाते यह शुभकारी, कर्मों की नश जाए क्यारी।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल से पूजा यहाँ रचाएँ, मोक्ष महाफल हम पा जाएँ।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**अर्घ्य बनाकर के यह लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।**
**सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**फागुन सित आठें पाए, सुर गर्भ कल्याण मनाए।**
**जिन सम्भव अन्तर्यामी, हम चरणों करें नमामी॥1॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक सित पूनम गाई, जो जन्म की तिथि कहलाई।**
**मेरू पे न्हवन कराया, देवों ने हर्ष मनाया॥2॥**

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षण भंगुर यह जग जाना, संयम धर मुक्ती पाना।**
**मगशिर सित पूनम प्यारी, प्रभु बने आप अनगारी॥3॥**

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक वदि चौथ बताए, जिन केवल ज्ञान जगाए।**
**अज्ञान के मेघ हटाए, रवि केवल जो प्रगटाए॥4॥**

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**षष्ठी सित चैत बखानी, प्रभु पाए शिव रजधानी।**
**कर्मों का किया सफाया, निज आतम सौख्य उपाया।।5।।**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''धवल कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।**
**सोरठा–संभवनाथ जिनेन्द्र, मोक्ष महल में जा बसे।**
**आये तब शत् इन्द्र, पूजन करने प्रभु की।।**
**धवल कूट से मोक्ष पधारे, अपने कर्म नाश कर सारे।**
**शत् इन्द्रों ने चरणों आकर, भक्ति गान किया है मनहर।।**
**करके सुशक्तिमान प्रभु की, चरण का वंदन किया।**
**लेकर मनोहर द्रव्य आठों, भाव से अर्चन किया।।**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणक मण्डित श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हे सम्भव जिन! सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा।**
**जो पद पाया है प्रभु तुमने, वह पाने का लक्ष्य रहा।।**
**चरण वन्दना करने हेतु, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री धवलकूटेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नव कोड़ा-कोड़ी बहत्तर, लाख सहस ब्यालीस प्रमाण।**
**शतक पाँच सौ अधिक मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान।।**



**धवल कूट की श्रेष्ठ वन्दना, का फल है ब्यालिस उपवास।**
**भक्ति भाव से पूजा करके, प्राणी पाते शिवपुर वास।।3।।**

ॐ ह्रीं संभवनाथ जिनेन्द्रादि नव कोडाकोडी द्वासप्तति द्विचत्वारिंशत् सहस्र पंचशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– नट की भाँति जीव है, नाटक यह संसार।**
**गुणमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।**

(चौपाई)

**जय जय जय सम्भव जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।**
**ग्रैवेयक से चयकर आये, श्रावस्ती को धन्य बनाए।।1।।**
**पिता जितारी जिनके गाए, मात सुसेना प्रभु जी पाए।**
**लाख साठ पूरव की भाई, आयु चार सौ धनुष ऊँचाई।।2।।**
**घोड़ा लक्षण जिनका गाया, तप्त स्वर्ण सम तन बतलाया।**
**जग के भोग जिन्हें ना भाए, छोड़ के सब जिन दीक्षा पाए।।3।।**
**चार घातिया कर्म नशाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।**
**समवशरण तब देव बनाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए।।4।।**
**ऋषि द्वय लक्ष आपके गाए, गणधर एक सौ पाँच बताए।**
**चारुदत्त जी प्रथम कहाए, जिनवर की जो महिमा गाए।।5।।**
**गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पाए अन्तर्यामी।**
**'विशद' भावना यही हमारी, शिवपद पाएँ हे त्रिपुरारी।।6।।**
**दोहा– सिद्ध शिला पर आपने, विशद बनाया धाम।**
**मुक्ती हो संसार से, करते चरण प्रणाम।।**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– भाते हैं हम भावना, प्रभू आपके द्वार।**
**कैसे भी हो शीघ्र हो, मेरा आत्म उद्धार।।**

*।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री अभिनन्दन जिन पूजा-4

स्थापना

**अभिनन्दन जिन राज का, करते हम आह्वान।**
**शिव पद हमको दो प्रभू, पाएँ जीवन दान॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सुखमा छन्द)

**क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, रोग त्रय मेरा नश जाए।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन केसर संग घिसाए, भवाताप के नाश को आए।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत अक्षय यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ॥**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग से मुक्ती पाएँ।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**सद्य चरू से पूज रचाएँ, क्षुधा रोग को पूर्ण नशाएँ।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**रत्नमयी शुभ दीप जलाएँ, मोह महातम शीघ्र नशाएँ।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

**ताजे श्रेष्ठ सरस फल लाएँ, पूजा कर शिव पदवी पाएँ।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।**
**अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**वैशाख शुक्ल छठ आई, रत्नों की झड़ी लगाई।**
**जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए॥1॥**

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बारस सित माघ बताई, जनता सारी हर्षाई।**
**जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए॥2॥**

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।**
**वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे॥3॥**

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।**
**सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए॥4॥**

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया॥5॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''आनंद कूट'' (अर्घावली)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा॥

श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा॥
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

हे अभिनन्दन! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।
आनन्द प्राप्त करने प्रभू जी, हम भी तव चरणों में आए॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आनंद कूटेभ्योनमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ा-कोड़ी रहे बहत्तर, सत्तर कोटी सत्तर लाख।
सहस ब्यालिस सप्तशतक मुनि, भक्त करें जिन पर अनुराग॥



कूटानन्द का वन्दन करके, जीवों में होता आनन्द।
पूजा करके भक्ति भाव से, हो जाते प्राणी निर्द्वन्द॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– अभिनन्दन वन्दन करें, चरण आपके दास।
जयमाला गाते चरण, पाने मुक्ती वास॥

(आल्हाछन्द)

अभिनन्दन प्रभु के चरणों में, माथा इन्द्र झुकाते हैं।
संवर पितु सिद्धार्था माता, के जो बाल कहाते हैं॥1॥
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, इन्द्र ऐरावत ले आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, बन्दर लक्षण बतलाया॥2॥
पचास लाख पूरब की आयू, देह स्वर्णमय शुभकारी।
साढ़े तीन सौ धनुष ऊँचाई, सहस्राष्ट लक्षण धारी॥3॥
सहस भूप सह दीक्षा पाए, दो दिन बाद लिए आहार।
नगर अयोध्या इन्द्रदत्त नृप, के गृह वरषे रत्न अपार॥4॥
गणधर एक सौ तीन आपके, वज्रनाभि के गणी प्रधान।
राक्षेश्वर था यक्ष आपका, यक्षी वज्र शृंखला जान॥5॥
कूटानन्द से तीर्थराज पर, खड्गासन से मोक्ष प्रयाण।
'विशद' मोक्ष पद पाए प्रभुजी, करने वाले जग कल्याण॥6॥

दोहा– शिवपद पाया आपने, आठों कर्म विनाश।
मुक्ती पाएँ हम प्रभू, कर दो पूरी आस॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– बनकर आये भक्त हम, प्रभू आपके द्वार।
करना होगा भक्त को, हे प्रभु! भव से पार॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः।

# श्री सुमतिनाथ जिनपूजा-5

स्थापना

**दोहा– सुमतिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम माथ।**
**आह्वानन् करते हृदय, ऊपर करके हाथ॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

**चढ़ाने लाये हम यह नीर, मिटाने जन्म जरा की पीर।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चढ़ाते सुरभित गंध विशेष, नाश कर भवाताप तीर्थेश।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**चढ़ाते अक्षत धवल महान, पाएँ हम अक्षय पद भगवान।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**चढ़ाने लाए सुरभित फूल, पूर्ण हो काम रोग निर्मूल।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**चढ़ाते यह नैवेद्य जिनेश, नाश हो क्षुधा रोग अवशेष।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**करें हम दीप से यहाँ प्रकाश, शीघ्र हो मोह महातम नाश।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**जलाते अग्नी में यह धूप, कर्म नश पाएँ सिद्ध स्वरूप।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**चढ़ाते फल हम हे भगवान!, मोक्ष फल पाएँ प्रभू महान।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।**
**प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

**श्रावण शुक्ला द्वितिया पाए, सुमतिनाथ जी गर्भ में आए।**
**माँ को सोलह स्वप्न दिखाए, मात पिता के भाग्य जगाए॥1॥**

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत शुक्ल एकादशि गाई, सुमतिनाथ जिन मंगलदायी।**
**जन्मे तीन ज्ञान के धारी, इन्द्र किए तब उत्सव भारी॥2॥**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नौमी सित वैशाख बताई, संयम धारे जिस दिन भाई।**
**प्रभु वैराग की ज्योति जगाई, मुनिपद की तब बारी आई॥3॥**

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत सुदी ग्यारस शुभ पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।**
**समवशरण आ देव बनाए, दिव्य देशना आप सुनाए॥4॥**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ग्यारस चैत शुक्ल की गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती पाई।**
**शिव पथ को तुमने अपनाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया॥5॥**
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''अविचल कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– सुमति नाथ भगवान, कूट सु अविचल से प्रभु।**
**पाए मोक्ष महान्, अष्टम भू पर जा बसे॥**
**इन्द्र देव गण सब मिल आए, सुमतिनाथ को पूज रचाए।**
**भाव सहित भक्ति की भारी, चरणों झुके सभी नर-नारी॥**
**झुककर सभी नर-नारी प्रभु की, वंदना को भाव से।**
**शुभ थाल में ले द्रव्य आठों, गीत गाते चाव से॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हे सुमतिनाथ! तुमने जग को, शुभ मति दे शिवपद दान किया।**
**भक्तों को तुमने करुणाकर, होकर सौभाग्य प्रदान किया॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री अविचल कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोड़ा-कोड़ी एक चुरासी, कोड़ी लाख बहत्तर जान।**
**सहस इक्यासी सप्त शतक मुनि, इक्यासी बतलाए महान॥**



**बत्तिस लाख अरु नौ करोड़ इस, कूट के वन्दन का फल मान।**
**करें वन्दना भक्ति भाव से, शीघ्र पाएँ वे पद निर्वाण॥3॥**
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोडाकोडी चतुरशीति कोडी द्वासप्तति लक्ष एकाशीति सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– पूजा करते भाव से, भक्ती धार विशेष।**
**गुणमाला गाते यहाँ, भव नश जाएँ अशेष॥**

(शम्भू छन्द)

**सुमतिनाथ तीर्थंकर पञ्चम, पञ्चम गति प्रगटाए हैं।**
**अन्तिम ग्रीवक से च्युत होकर, जन्म अयोध्या पाए है॥1॥**
**मात मंगला सोलह सपने, देख हुई थी भाव विभोर।**
**पिता मेघरथ के गृह खुशियाँ, अनुपम छाई चारों ओर॥2॥**
**अष्ट देवियों को माता की, सेवा का अवसर आया।**
**पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, का सौभाग्य इन्द्र पाया॥3॥**
**चकवा चिन्ह आपके पद में, धनुष तीन सौ ऊँचाई।**
**चालिस लाख पूर्व की आयु, देह स्वर्ण सम शुभ गाई॥4॥**
**पूर्व भवों का चिन्तन करके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।**
**पञ्च महाव्रत धारण करके, मुनिवर दीक्षा पाए थे॥5॥**
**कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया है।**
**भवि जीवों ने दिव्य देशना, का अवसर शुभ पाया है॥6॥**
**दोहा– योग रोधकर आपने, किया आत्म का ध्यान।**
**मुक्त हुए संसार से, शिवपुर किया प्रयाण।**
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, हुए त्रिलोकी नाथ।**
**'विशद' शांति कर दीजिए, चरण झुकाते माथ॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री पद्मप्रभु पूजन-6

स्थापना

**पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।**
**तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

**हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, हम काम बाण विनसाएँ।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।**
**प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

**गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।**
**माघ कृष्ण पष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी॥1॥**

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।**
**जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए॥2॥**

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक वदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।**
**मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए॥3॥**

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।**
**धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए॥4॥**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए॥5॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''मोहन कूट'' (अर्घावली)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– मोहन कूट प्रसिद्ध, है तीनों ही लोक में।
हुए जिनेश्वर सिद्ध, पद्मप्रभु जी जहाँ से॥
हे त्याग मूर्ति! करुणा निधान! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर!।
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज!, सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर!॥
हे परमब्रह्म! हे पद्मप्रभु! हे भूप! श्री धर के नंदन!।
हम अष्ट द्रव्य से करते हैं प्रभु, भाव सहित उर से अर्चन॥
हे नाथ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बंधा जाओ।
हम भूल भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभ, पाकर पाये केवल ज्ञान।
कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥
ॐ ह्रीं मोहन कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ि निन्यानवे लाख सतासी, मुनिवर तैंतालिस हज्जार।
सात सौ सत्तावन भी जानों, मुक्ती पाए मंगलकार॥



सुविधिनाथ अरु मुनिसुव्रत के, मध्य रहा यह कूट महान।
श्यामवर्ण के चरणा शोभते, मोहनकूट है जिसका नाम॥3॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि नवनवति कोडी सप्ताशीलि लक्ष त्रिचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शतक सप्तनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(मानव छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश॥1॥
अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
धरण नृप रही सुसीमा माता, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण॥2॥
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम॥3॥
जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष॥4॥
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान॥5॥
पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मो का प्रभु नाश।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास॥6॥

दोहा– प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।
गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।
अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान॥
*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

# श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन-7

स्थापना

**जिन सुपार्श्व का दर्श कर, जागे उर श्रद्धान।**
**आओ तिष्ठो मम हृदय, करते हम आह्वान।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

**शीतल जल भरके हम लाए, जिन पद में त्रयधार कराए।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन यह भवताप नशाए, अर्चा करने को हम लाए।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पद पाने हम आए।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प लिए यह मंगलकारी, काम रोग के नाशनकारी।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**चरु से जिन पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**घृत का जगमग दीप जलाए, मोह नाश मेरा हो जाए।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**सुरभित धूप जला हर्षाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

**फल यह चढ़ा रहे शुभकारी, मुक्ती पद दायक मनहारी।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव जाएँ।**
**पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**षष्ठी सित भादों पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।**
**उत्सव सब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए।।1।।**

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्वादशी जेठ सित गाई, जन्मे सुपार्श्व जिन भाई।**
**जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए।।2।।**

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्वादशी जेठ सित स्वामी, संयम धारे जगनामी।**
**वैराग्य हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया।।3।।**

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुन वदि छठी निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।**
**अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रगटाए।।4।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुन वदि सातें जानो, जिन वर शिव पाए मानो।**
**सम्मेद शिखर से स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी।।5।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''प्रभास कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।**
**सोरठा– पावन कूट प्रभास, जिन सुपार्श्व का जानिए।**
**पाए मुक्तिवास, योग रोध करके सभी।।**
**जन्म बनारस नगरी पाया, हरित रंग थी जिनकी काया।**
**मन में जब वैराग्य समाया, छोड़ चले सब जग की माया।।**
**माया जगत् में कर्म का, बंधन कराती है अरे।**
**यह कर्म उसको न बंधे, जो धर्म का पालन करे।।**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।**
**प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है।**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री प्रभास कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**उनन्चास कोड़ा कोड़ी अरु, कोड़ि चुरासी जैन मुनीश।**
**लाख बहत्तर शतक सात अरु, सप्त शतक ब्यालीश ऋषीश।।**



**फल उपवास बत्तिस कोड़ी का, किए वन्दना होवे प्राप्त।**
**अनुक्रम से शिव पथ के राही, बनकर के होते हैं आप्त।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि एकोनपंचाशत कोडाकोडी चतुरशीति कोडी द्वासप्तति लक्ष सप्त सहस्र सप्तशतक द्विचरवारिंशद मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– नाथ सुपारस आपकी, गाए जो जयमाल।**
**भक्ति जगाए निज हृदय, होवे वही निहाल।।**

(ताटंक छन्द)

**मध्यम ग्रीवक से चय प्रभु ने, नगर बनारस जन्म लिया।**
**सुप्रतिष्ठ राजा पृथ्वीमति, माँ को तुमने धन्य किया।।1।।**
**जन्मोत्सव पर शत् इन्द्रों ने, मेरु पे न्हवन कराया था।**
**स्वस्तिक चिन्ह देख सुरपति ने, नाम सुपार्श्व बताया था।।2।।**
**तीस लाख पूरव की आयू, तन का वर्ण हरित पाए।**
**दो सौ धनुष रही ऊँचाई, सहस्राष्ठ शुभगुण गाए।।3।।**
**पतझड़ देख भावना भाके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।**
**अनुमोदन करने लौकान्तिक, ब्रह्म स्वर्ग से आए थे।।4।।**
**मनोगती ले देव पालकी, प्रभु को वन में पहुँचाए।**
**सर्व परिग्रह त्याग प्रभु जी, मुनिवर की दीक्षा पाए।।5।।**
**उत्तम तप का कर्म नाश प्रभु, केवल ज्ञान जगाए हैं।**
**समवशरण में दिव्य देशना, गणधर सुर नर पाए हैं।।6।।**

**दोहा– तीर्थराज सम्मेद पर, जानो कूट प्रभास।**
**कर्म नाश शिवपुर गये, किया जहाँ पर वास।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– भक्तिभाव से भक्त जो, करते प्रभु गुण गान।**
**अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।**

*।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन-8

स्थापना

**सोरठा– कांती चन्द्र समान, चन्द्र प्रभु भगवान की।**
**भाव सहित आह्वान, हृदय कमल में आपका।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल टप्पा)

**निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।**
**जन्म जरादी रोग नाश हो, जो है दुखदायी।।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।1।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन में केसर की खुशबू, अतिशय महकाई।**
**भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई।।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।2।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।**
**अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई।।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।3।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।**
**जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई।**



**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।4।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।**
**क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमामय भाई।।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।5।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।**
**महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।6।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।**
**नशें कर्म आठों अब मेरे, जो है दुखदायी।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।7।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी**
**महामोक्ष फल पाय जिसकी, फैली प्रभुताई।।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।8।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, हमने शुभ भाई।**
**पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई।।**
**पूजते हम जिन पद भाई।**
**जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।9।। पूजते....**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चालछन्द)

**पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।**
**गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए॥1॥**

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।**
**सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ॥2॥**

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।**
**क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना॥3॥**

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।**
**सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए॥4॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।**
**प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''ललित कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**

**सोरठा– ललित कूट है श्रेष्ठ, जिसकी पूजा हम करें।**
**पाए धर्म यथेष्ठ, चन्द्रप्रभु जिनदेव जी॥**



**हे चन्द्रप्रभो! हे चन्द्रानन!, महिमा महान् मंगलकारी।**
**तुम चिदानंद आनंद कंद, दुःख द्वंद फंद संकटहारी॥**
**हे वीतराग! जिनराज परम, हे परमेश्वर! जग के त्राता।**
**हे मोक्ष महल के अधिनायक!, हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता!॥**
**मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ! कृपाकर आ जाओ।**
**हम पूजन करते भाव सहित, मुझको सद्राह दिखा जाओ॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।**
**ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री ललितकूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**अरब रहे नौ सौ चौरासी, द्वादश कोड़ि असीती लाख।**
**सहस चुरासी पाँच सौ पंचानवे, मुनिवर कीन्हे कर्म विनाश॥**
**छियानवे लाख उपवासों का फल, वन्दन करके पाते जीव।**
**मोक्षमार्ग पर बढ़ने हेतू, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्रादि नव खरब चतुरशीति अरब द्वादश कोडी अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्र पंचशतक पंच नवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– भक्ती से भवि जीव का, कटे कर्म जंजाल।**
**मुक्ती पाने के लिए, गाते हैं जयमाल॥**

(चाल टप्पा)

**जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्र पुरी गाई।**
**वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ आए भाई॥**
**चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।**
**जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥1॥**
**चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।**
**गर्भागम पूरा होने पर, जन्म घड़ी आई।**
**न्हवन कराया शत् इन्द्रो ने, जग मंगलदायी॥2॥**
**चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।**
**दायें पग में अर्धचन्द्र शुभ, लक्षण है भाई।**
**आयू लाख पूर्व दश की प्रभु, पाए सुखदायी॥3॥**
**चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।**
**धवल रंग था धनुष डेढ़ सौ, प्रभु की ऊँचाई।**
**तड़ित चमकता देख प्रभू ने, जिन दीक्षा पाई॥4॥**
**चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।**
**कर्म घातिया नाश प्रभू ने, ज्ञान निधी पाई।**
**धन कुबेर ने समवशरण की, रचना बनवाई॥5॥**
**चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।**

**दोहा– आत्म ध्यान करके प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।**
**शिव नगरी में जा किया, सिद्ध शिला पर वास॥**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– भक्ती करते भक्तगण, होके भाव विभोर।**
**शिव पद के राही बनें, बढ़े मोक्ष की ओर॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री पुष्पदन्त पूजन-9

स्थापना (सोरठा)

**पुष्पदन्त भगवान, शिवपथ के राही बने।**
**करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए॥**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

**यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥1॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥3॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥4॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥5॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥6॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥7॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥8॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।**
**हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥9॥**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

**फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।**
**तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार॥1॥**
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।**
**देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान॥2॥**
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।**
**मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग॥3॥**
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।**
**शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार॥4॥**
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।**
**जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव॥5॥**
ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## "सुप्रभ कूट" (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– सुप्रभ कूट महान्, तीनो लोक में।**
**मुक्ति का स्थान, पुष्पदन्त भगवान का॥**
**सम्मेदाचल पर्वत जग में न्यारा, सब जीवों का तारण हारा।**
**महिमा जिसकी अतिशयकारी, तीन लोक में मंगलकारी।**
**हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।**
**यह धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसा सुफल अहा।**
**अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशदभाव से ध्याते हैं॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।**
**रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री सुप्रभकूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोटा कोटी एक निन्यानवे, लाख सप्त हज्जार प्रमाण।**
**सात सौ अस्सी सुप्रभ कूट से, मुनिवर पाए पद निर्वाण॥**

**एक कोटि प्रोषध का फल है, प्राणी पाते हैं शुभकार।**
**श्री जिनवर जिनमुनियों के पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोडाकोडी नवनवति लक्ष सप्त सहस्र सप्त शतक अशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।**
**मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।**

(छन्द वेसरी)

**पुष्पदन्त तीर्थंकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।**
**पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा।।1।।**
**मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।**
**धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो।।2।।**
**दो लख पूर्व की आयु पाये, निष्कंटक प्रभु राज्य चलाए।**
**उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी।।3।।**
**दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।**
**प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।4।।**
**ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।**
**गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए।।5।।**
**सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।**
**गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, ''विशद'' हुए मुक्ती पथगामी।।6।।**

**दोहा– शुक्रारिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।**
**जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।**
**शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव।**

*।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री शीतलनाथ पूजन–10

स्थापना (सोरठा)

**पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।**
**निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

**चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तव पद यहाँ जिनेश।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।7।।**
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।8।।**
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।**
**जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।9।।**
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

**शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।**
**प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार।।1।।**
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।**
**शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम।।2।।**
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।**
**जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन।।3।।**
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।**
**तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप।।4।।**
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**आश्विन शुक्ला आठें जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।**
**कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास।।5।।**
ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''विद्युतवर कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।**
**सोरठा– मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।**
**दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का।।**
**कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।**
**बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए।।**
**पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।**
**हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो।।**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल चन्दन से भी अति शीतल, शीतल नाथ कहाए हैं।**
**नाथ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं।।**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।**
ॐ ह्रीं श्री विद्युतवर कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोटा कोटी अठारह ब्यालिस, कोटि लाख बत्तीस प्रमाण।**
**ब्यालिस हजार नौ सौ बतलाए, पाँच मुनी पाए निर्वाण।।**

**कूट सुविद्युतवर के वन्दन, से फल हो कोटी उपवास।**
**अल्प समय में भव्य जीव भी, पा लेते हैं शिवपुर वास॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अष्टादश कोडाकोडी द्विचत्वारिंशत् कोडी द्वात्रिंशत् लक्ष द्विचत्वारिंशत सहस्रनवशतक पंच मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।**
**जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम॥**

(मोतिया दाम)

**स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर महिलपुर में सुखदाय।**
**गर्भ पाए शीतल जिन राय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय॥1॥**
**पिता दृढ़रथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा मात।**
**जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष॥2॥**
**मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।**
**कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान॥3॥**
**प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।**
**देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आतम का आभास॥4॥**
**स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।**
**जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण॥5॥**
**प्रथम गणधर का कुन्थू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।**
**कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज॥6॥**

**दोहा– कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।**
**जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश॥**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।**
**भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री श्रेयांसनाथ पूजन-11

स्थापना

**सोरठा– श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।**
**करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय॥**

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धरि छन्द)

**हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीर।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥1॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥3॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥4॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥5॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥6॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥7॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥8॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप**
**जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥9॥**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

**पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।**
**किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का॥1॥**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।**
**इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे॥2॥**
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।**
**चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब॥3॥**
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।**
**किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे॥4॥**
ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।**
**पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से॥5॥**
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''संकुल कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– श्रेयश पाया श्रेष्ठ, श्री श्रेयांस तीर्थेश ने।**
**जिनवर हुए यथेष्ठ, कर्म घातिया नाशकर॥**
**संकुल कूट बड़ा मनहारी, तीर्थराज ये विस्मयकारी।**
**मन को आह्लादित कर देवे, दुःखियों के दुःख जो हर लेवे॥**
**हरता दुखों को जीव के जो, भाव से वंदनकरें।**
**हो नाश दुख दुर्गति का जो, श्रेष्ठ अभिनंदन करें॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।**
**स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री संकुल कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**छियानवे कोटा-कोटी छियानवे, कोटी छियानवे लाख प्रमाण।**
**नौ हजार अरु पाँच सौ ब्यालिस, पाए हैं मुनि पद निर्वाण॥**

**कोटी प्रोषध का फल पाते, करें वन्दना हो अविकार।**
**शिव पद पाने हम जिन पद में, करते वन्दन बारम्बार॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोडाकोडी षण्णवति कोडी षण्णवति लक्ष नवसहस्र पंचशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।**
**जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार॥**

(चाल छन्द)

**श्रेयांस नाथ गुणधारी, इसजग में मंगलकारी।**
**है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी॥1॥**
**नृप विष्णूराज कहाए, माँ वेणू देवी पाए।**
**यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए॥2॥**
**किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।**
**गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए॥3॥**
**चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।**
**लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई॥4॥**
**तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।**
**प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए॥5॥**
**सुर समवशरण बनवाए, सात योजन का जो गाए।**
**प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए॥6॥**

**दोहा– कर्म नाशकर के प्रभू, पाए पद निर्वाण।**
**भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान॥**

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दोहा– भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।**
**विशद भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग॥**

*॥इत्याशीर्वाद॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नम:।**



# श्रीवासुपूज्य पूजन–12

स्थापना (सोरठा)

**वासुपूज्य भगवान, जगत पूज्यता पाए हैं।**
**हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

**जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।**
**रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।**
**भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।**
**अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।**
**मुक्ती हो संसार से, पाए शिव पद वास॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तुम चरणों भगवान।**
**क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।**
**ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।**
**अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।**
**विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वार॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।**
**यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

**हो गई माला–माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।**
**दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे॥1॥**

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।**
**इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए॥2॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।**
**छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने॥3॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।**
**कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को॥4॥**

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।**
**सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद॥5॥**

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घावली)

**श्री चंपापुर क्षेत्र की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– पाए पद निर्वाण, चंपापुर से प्रभु जी।**
**वासुपूज्य भगवान, कालदोष यह जानिए॥**
**चम्पापुर नगरी मन भाए, पांचों कल्याणक प्रभु पाए।**
**बालयति जो प्रथम कहाए, उनकी महिमा कही न जाए॥**
**महिमा कही न जाय प्रभु की, जो परम मंगल कहे।**
**उनके गुणों का गान करने, में सफल हम न हरे॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।**
**जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**है मन्दर सुर गिर चम्पापुर, श्री वासु पूज्य का मोक्ष स्थान।**
**एक सहस मुनि वासुपूज्य के, साथ में पाए पद निर्वाण॥**

मुक्ती पाए यहाँ से कई मुनि, प्राप्त करेंगे शिव का द्वार।
श्री जिनवर जिन मुनिराजों के, पद में वन्दन बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान॥

## ( ज्ञानोदय छन्द )

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे॥1॥
जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान॥2॥
गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए॥3॥
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊंचाई जान।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान॥4॥
दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ॥5॥
छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण॥6॥

दोहा– चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।
भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।
'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।



# श्री विमलनाथ पूजन–13

स्थापना (सोरठा)

विमलनाथ तीर्थेश, शिव पदवी को पाए हैं।
धारा दिगम्बर भेष, अतः बुलाते निज हृदय॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

नाथ आपको हम सब ध्याते, चरणों में यह नीर चढ़ाते।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सेवक बनकर हम सब आये, चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

भक्त बने भक्ती को आये, अक्षय पद को अक्षत लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर हम हर्षाएँ, काम रोग को पूर्ण नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप जलाते हम हे स्वामी, मोहनाश करने शिवगामी।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित हम यह धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥7॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह यहाँ चढ़ाने लाए, हम शिव फल पाने को आए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है शुभ मुक्ती पद दायी॥
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥9॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमा छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिला धन्य बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए॥1॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए।
ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए॥3॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए॥4॥
ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी॥5॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''सुवीर कूट'' (अर्घावली)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– कूट सुवीर महान्, कहते संकुल कूट भी।
विमलनाथ भगवान, मोक्ष महल में जा बसे॥
विमलनाथ से नाथ नहीं हैं, सर्व लोक में और कहीं हैं।
चरण शरण में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया॥
सौभाग्यशाली वह जहाँ में, प्रभु का वंदन करें।
ले द्रव्य आठों भाव से जिन, चरण का अर्चन करें॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।
जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मस पूर्ण हरें॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥
ॐ ह्रीं श्री सुवीर कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्तर कोटा-कोटी जानो, साठ लाख ब्यालिस हज्जार।
सात सौ मुनिवर मुक्ती पाए, जिनको वन्दन बारम्बार॥

**एक कोटि उपवासों का फल, कूट वन्दना किए मिले।**
**सम्यक् श्रद्धानी जीवों का, जिन अर्चाकर हृदय खिले॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री सप्तति कोडाकोडी षष्ठी लक्षषष्ठी सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– विमलनाथ भगवान हैं, विमल गुणों की खान।**
**जिन गुण माला गाए वह, पाए केवलज्ञान॥**

(वीरछन्द)

**हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो! हमने तुमको ना पहिचाना।**
**इसलिये चौरासी के चक्कर, पड़ रहे अनादी से खाना॥1॥**
**तुम करुणा निधि हो हे स्वामी, हम द्वार आपके आये हैं।**
**चारों गतियों में दुख पाए, हम उनसे अब घबराए हैं॥2॥**
**तुम विमल गुणों के धारी हो, तुमने सत् संयम पाया है।**
**निज ध्यान अग्नि में हे स्वामी, कर्मों को पूर्ण जलाया है॥3॥**
**शत् संयम जो धारण करते, वे केवलज्ञान जगाते हैं।**
**वह कर्म घातिया नाश करें, फिर अनन्त चतुष्टय पाते हैं॥4॥**
**भगवान आपकी वाणी में, तत्त्वों का सार बताया है।**
**शुभ अनेकांत अरु स्याद्वाद, शत् समयसार समझाया है॥5॥**
**शुभ कर्म किए सुख पाएँगे, हमने अब तक ऐसा जाना।**
**है वीतराग शुभ धर्म 'विशद' उसको अब तक ना पहिचाना॥6॥**

**दोहा– वीतराग जिन धर्म को, धार बने अनगार।**
**कर्मनाशकर जीव सब, करें आत्म उद्धार॥**

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– श्रद्धा से जिन दर्श पा, जिनवाणी से ज्ञान।**
**'विशद' साधना कर सदा, पावें पद निर्वाण॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री अनन्तनाथ पूजन-14

स्थापना

**सोरठा– गुणानन्त के कोश, अनन्त नाथ भगवान हैं।**
**जीवन हो निर्दोष, आह्वानन् करते अतः॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**जल पीकर भी बुझ सकी नहीं, मेरे जीवन की प्यास कभी।**
**जल पीते पीते युग बीते, फिर भी मन रहा उदास अभी॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**सूरज से भी ज्यादा गर्मी, मेरे इस तन मन में छाई हैं।**
**चन्दन क्या शीतलता देगा, जब धन की आस लगाई हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**पद है दुनियाँ में अनगिनते, क्षण क्षण में क्षय हो जाते हैं।**
**यह पद पाने को जग प्राणी, मन में आकुलता पाते हैं॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**क्षण भंगुर यह जीवन गाया, हम समझ नहीं यह पाए हैं।**
**जो चतुर्गती का कारण है, वह चक्र काटने आए हैं॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**व्यंजन खाकर के कई हमने, नश्वर काया को पुष्ट किया।**
**आनन्द आत्मरस का हमने, शाश्वत होता जो नहीं लिया॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**तम हरने वाला है दीपक, जो नाश मोह ना कर पाए।**
**होवे प्रकाश निज चेतन में, जो दीप ज्ञान का प्रजलाए॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**अग्नी में गंध जलाई है, पर कर्म नहीं जल पाए हैं।**
**जिसने निज आतम को ध्याया, उसने सब कर्म नशाए हैं।।7।।**
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब जीव कर्म का फल पाते, जिनवाणी में यह गाया है।**
**जो शुक्ल ध्यान में लीन हुए, उनने शाश्वत फल पाया है।।8।।**
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**हम भूले निज की शक्ती को, कर्मों ने दास बनाया है।**
**हे नाथ आपकी महिमा सुन, यह राज समझ में आया है।।9।।**
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमाछन्द)

**कार्तिक वदि एकम तिथि जानो, गर्भागम प्रभु का पहिचानो।**
**देव रत्न वृष्टी करवाए, माँ के गर्भ का शोध कराए।।1।।**
ॐ ह्रीं कार्तिक प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्येष्ठ कृष्ण द्वितिया तिथि आयी, नगर अयोध्या बजी बधाई।**
**जन्मोत्सव तव देव मनाए, नृत्य गान कर बाद्य बजाये।।2।।**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, दीक्षा धार हुए अनगारी।**
**देव पालकी स्वर्ग से लाए, प्रभु को दीक्षा वन पहुँचाए।।3।।**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत अमावश को जिन स्वामी, ज्ञान जगाए अन्तर्यामी।**
**सुर नर जय-जय कार लगाए, चरणों में नत शीश झुकाए।।4।।**
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**चैत अमावश तिथि शुभकारी, हुए प्रभू मुक्ती पथ धारी।**
**अपने आठों कर्म नशाए, मोक्ष महल में धाम बनाए।।5।।**
ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''स्वयंप्रभ कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।**
**सोरठा– मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।**
**दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का।।**
**कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।**
**बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए।।**
**पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।**
**हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो।।**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।**
**गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम।।**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।**
ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**छियानवे कोटा-कोटी सत्तर, कोटी सत्तर लाख प्रमाण।**
**सत्तर सहस सात सौ मुनिवर, किए यहाँ से मोक्ष प्रयाण।।**

**कूट स्वयं प्रभु के वन्दन का फल, एक कोटि गाया उपवास।**
**भव्य जीव जो करें वन्दना, पाएँ वे भी शिवपुर वास॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि षड्नवति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति। लक्ष सप्तति सहस्त्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– जिनानन्त भगवान हैं, गुण अनन्त की खान।**
**गुण माला गाते विशद, करने निज कल्याण॥**

(सखी छन्द)

**चय अच्युत स्वर्ग से आये, इक्ष्वाकुवंशी गाए।**
**सिंहसेन पिता कहलाए, माँ सूर्ययशा जिन पाए॥1॥**
**शुभ कौशल देश कहाए, प्रभु नगर अयोध्या आये।**
**तव स्वर्ग समान बताया, लक्षण सेही कहलाया॥2॥**
**आयू पचास लख पूरव, जिन धनुष पचास अपूरव।**
**प्रभु उल्का पतन निहारे, जग से विरागता धारे॥3॥**
**दीक्षा लेने वन आए, इक सहस भूप संग पाए।**
**जब कर्म घातिया नाशे, तव केवल ज्ञान प्रकाशे॥4॥**
**गणधर पचास जिन पाए, जय प्रथम गणी कहलाए।**
**है यक्ष सुकिन्नर भाई, यक्षी वैरोटी गाई॥5॥**
**सम्मेद शिखर प्रभु आये, शिव स्वयंप्रभु कूट से पाए।**
**हम 'विशद' ज्ञान शुभ पाएँ, सिद्धों में धाम बनाए॥6॥**

**दोहा– गुण गाते हम आपके, गुण पाने भगवान।**
**जिन ने गुण प्रगटाए वह, पद पाए निर्वाण॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– हैं अनन्त गुण आपके, महिमा का ना पार।**
**भक्ती कर पाएँ प्रभू, इस जीवन का सार॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री धर्मनाथ पूजन-15

स्थापना (चाल छन्द)

**जिन धर्म नाथ शिवगामी, मुक्ती पद पाए स्वामी।**
**उनको निज हृदय बुलाते, आह्वानन कर तिष्ठाते॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

**निर्मल जल से कलश भरीजे, जिन पद में त्रयधारा दीजे।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन में केसर घिस लीजे, जिन चरणों की अर्चा कीजे।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत के शुभ थाल भराएँ, अक्षय पद पाके शिव पाएँ।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प चढ़ाकर पूजा कीजे, काम रोग अपना हर लीजे।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**ताजे शुभ नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधारोग को पूर्ण नशाएँ।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**घृत के शुभकर दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**धूप जलाएँ हम शुभकारी, अष्टकर्म की नाशन कारी।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥7॥**
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूजा करने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥8॥**
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**पद अनर्घ्य दायक शुभकारी, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी।**
**धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥9॥**
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(वेसरी छन्द)

**सित वैशाख अष्टमी गाए, धर्म नाथ जी गर्भ में आए।**
**रत्नपुरी में रत्न सुवर्षे, सुरनर सभी वहाँ पे हर्षे॥1॥**
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, जन्म लिए भू पे त्रिपुरारी।**
**पाण्डुक वन अभिषेक कराए, देव सभी जयकार लगाये॥2॥**
ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उल्कापात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पद के पथगामी।**
**माघ शुक्ल तेरस तिथि गाई, दीक्षा की पावन घड़ि आई॥3॥**
ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्म घातिया आप नशाए, ऋद्धि सिद्धियाँ स्वामी पाए।**
**केवल ज्ञान का दीप जलाए, मुक्ती पथ की राह दिखाए॥4॥**
ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**निज स्वभाव में रमने वाले, कर्म नाश शिवपुर को चाले।**
**ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, गिर सम्मेद शिखर से भाई॥5॥**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''सुदत्तवर कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– कूट सुदत्त महान्, अतिशय कारी तीर्थ पर।**
**धर्मनाथ भगवान, मोक्ष गए हैं जहाँ से॥**
**प्रभु ने धर्म ध्वजा फहराई, अनुक्रम से फिर जहाँ से।**
**अष्ट कर्म का किया सफाया, केवल ज्ञान की है यह माया॥**
**माया कही यह ज्ञान की, जिसने जगाया है परम।**
**वह नाश करके भव दुःखों का, लक्ष्य पाया है चरम॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ!, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।**
**तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री सुदत्तवर कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**उन्नीस कोटा-कोटी कोटी, उन्निस हैं नव लाख प्रमाण।**
**नौ हजार सात सौ पंचानवे, मुनिवर पाए मोक्ष प्रयाण॥**

**स्वयं प्रभ कूट के वन्दन का फल, एक कोटि गाया उपवास।**
**भव्य जीव जो करें वन्दना, पाएँ वे भी शिवपुर वास॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि एकोनविंशति कोडाकोडी एकोनविंशति कोडी नव लक्ष नव सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– धर्म धुरन्धर धर्मधर, विशद धर्म के ईश।**
**जयमाला गाते चरण, झुका भाव से शीश॥**

(जोगीरासा छन्द)

**भरत क्षेत्र में अंग देशशुभ, रत्नपुरी शुभ गाई।**
**सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, धर्मनाथ जिन भाई॥1॥**
**भानुराय हैं पिता आपके, मात सुव्रता पाये।**
**कुरू वंश के स्वामी अनुपम, कश्यप गोत्री गाए॥2॥**
**हुआ जन्म तव देव यहाँ पर, जन्म कल्याण मनाए।**
**मेरुगिरी पे न्हवन कराके, हर्षे नाचे गाये॥3॥**
**धनुष पैंतालिस है ऊचाई, स्वर्ण वर्ण तुम पाए।**
**आयू लाख वर्ष दश की है, वज्रदण्ड पद गाए॥4॥**
**उल्का पात देखकर स्वामी, जग से हुए विरागी।**
**निज आतम का ध्यान लगाए, ज्ञान किरण तव जागी॥5॥**
**पाँच योजन का समवशरण तब, आके देव बनाए।**
**भव्य जीव तव दिव्य ध्वनी सुन, शत् श्रद्धान जगाए॥6॥**

**दोहा– कर्म नाशकर आपने, पाया पद निर्वाण।**
**तव पद के राही बनें, दो ऐसा वरदान॥**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– धर्मनाथ जी धर्म की, बहा रहे हैं धार।**
**अवगाहन कर जीव कई, होते भव से पार॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री शांतिनाथ पूजन-16

स्थापना (सखी छन्द)

**हैं शांतिनाथ शिवकारी, इस जग में मंगलकारी।**
**निज उर में हम तिष्ठाएँ, पूजा करके सुख पाएँ॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

**प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥7॥**
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बने मोक्ष पथ गामी।**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥8॥**
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ**
**यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥9॥**
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

**भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।**
**दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥1॥**
ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।**
**सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥2॥**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।**
**जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥3॥**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।**
**ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए॥4॥**
ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।**
**प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥**
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## **''कुन्दप्रभ कूट''** (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– कूट कुन्दप्रभ जान, शांतिनाथ भगवान की।**
**मोक्ष गए भगवान, कर्मनाश कर जहाँ से॥**
**शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में आप विधाता।**
**प्रभु हैं जन-जन के उपकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥**
**सारे जहाँ में आप मंगल, कर रहे सद्धर्म से।**
**पुण्य का संचय करें, प्राणी सभी सत्कर्म से॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हे शांतिनाथ! शांती दाता, जन-जन को शांती प्रदान करो।**
**भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**नौ कोटा-कोटी नौ लख और, नौ हजार नौ शतक प्रमाण।**
**निन्यानवे संख्या मुनियों की, पाए हैं जो पद निर्वाण॥**

**असंख्यात मुनियों ने गिरि पर, किया बैठकर आतम ध्यान।**
**एक कोटि प्रोषध का फल हो, करें भाव से जो गुणगान॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि नव कोडाकोडी नव लक्ष नव सहस्र नव शतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– शांति प्रदायिक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।**
**जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल॥**

(छन्द–तामरस)

**चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।**
**शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते॥1॥**
**सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।**
**सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते॥2॥**
**जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।**
**गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते॥3॥**
**तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।**
**मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते॥4॥**
**जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।**
**देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते॥5॥**
**अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।**
**करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते॥6॥**

**दोहा– शांति के हैं कोष जिन, शांती के आधार।**
**विशद शांति पाए स्वयं, शांति के दातार॥**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।**
**सुनो प्रार्थना हे प्रभो! बोलें जय-जयकार॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**



# श्री कुन्थुनाथ पूजन-17

स्थापना (चाल छन्द)

**हैं कुन्थुनाथ अविकारी, जिनकी है महिमा न्यारी।**
**जिनको हम पूज रचाते, अपने उर में तिष्ठाते॥**

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द) (लक्ष्मीधरा छन्द)

**नीर निर्मल से झारी भरा लाए हैं,**
**रोग जन्मादी के नाश को आए हैं।**
**कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,**
**प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**केशरादी से हमने कटोरी भरी,**
**जिन प्रभू पाद में आन चर्चन करी**
**कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,**
**प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**दुग्ध के फैन सम श्वेत अक्षत लिए,**
**आत्मनिधि प्राप्त हो पुंज रचना किए।**
**कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,**
**प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**बाग से फूल चुनकर यहाँ लाए हैं,**
**काम का रोग हरने शरण आए हैं।**
**कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,**
**प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे नैवेद्य हम यह चढ़ाते अहा,
क्षुधा व्याधी नशे लक्ष्य मेरा रहा।।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

प्रज्ज्वलित दीप लेके करें आरती,
हृदय जागे मेरे ज्ञान की भारती।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप दश गंध ले अग्नि में जारते,
कर्म शत्रू प्रभु आप ही निवारते।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये ताजे सरस थाल भर लाए हैं,
मोक्ष पद प्राप्त हो भावना भाए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
नाथ पद पूजते, सर्वसिद्धी करें।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।9।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।



## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(तोटक छन्द)

श्रावण कृष्ण दशें को भाई, गर्भ में आए कुन्थु जिनेश।
दिव्य रत्न देवों ने आकर, पृथ्वी पर वर्षाए विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सुदि वैशाख बताई, नगर हस्तिनापुर शुभकार।
जन्म कल्याणक देव मनाए, हुई धरा पर जय जयकार।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष वैशाख सु एकम, दीक्षा धारे कुन्थूनाथ।
कामदेव चक्री पद छोड़ा, तीर्थंकर पद पाए सनाथ।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की तृतिया जानो, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
इन्द्र शरण में आये मिलकर, समवशरण सुर रचे महान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख तिथी एकम को, कीन्हें प्रभु जी कर्म विनाश।
कूट ज्ञानधर से जिन स्वामी, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''ज्ञानधर कूट'' (अर्घावली)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– कुंथुनाथ भगवान, परम ज्ञानधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए संसार से।।

पावन कूट ज्ञानधर भाई, कुंथुनाथ जिन मुक्ति पाई।
अन्य मुनीश्वर ध्यान लगाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए॥
पाए हैं मुक्तिधाम अनुपम, नहीं जिसका अंत है।
अतिशय मनोहर कूट अनुपम, विशद महिमावंत है॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।
निज गुण पाकर के हे स्वामी!, किया आपने शिवपुर वास॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानधर कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा कोटी छियानवे, कोटि बत्तिस लाख प्रमाण।
छियानवे सहस्त्र सात सौ ब्यालिस, किए मुनीश्वर मोक्ष प्रयाण॥
असंख्यात मुनियों ने गिरि पर, किया बैठकर आतम ध्यान।
एक कोटि प्रोषध का फल हो, करें भाव से जो गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि षड्नवति कोडाकोडी षड्नवति कोडी द्वात्रिंशत् लक्ष षड्नवति सहस्त्रसप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– त्रयपद धारी जिन हुए, कुन्थुनाथ भगवान।
जयमाला वर्णन करें, करने प्रभु गुणगान॥

(कुसुमलता छन्द)

जम्बुद्वीप में नगर हस्तिना पुर गाया है मंगलकार।
सूरसेन राजा कहलाए, रानी श्री मती मनहार॥1॥
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, गर्भागम पाए भगवान।
रत्न वृष्टि की तव देवों ने, प्रभु फिर पाए जन्म कल्याण॥2॥



इन्द्र राज ने मेरुगिरी पर, न्हवन कराया मंगलकार।
बकरा चिन्ह देखकर बोला, कुन्थुनाथ का जय-जयकार॥3॥
सहस पंचानवे वर्ष की आयू, तन पाए प्रभु स्वर्ण समान।
पैंतिस धनुष रही ऊँचाई, प्रभू जगाए भेद विज्ञान॥4॥
विजया लाए देव पालकी, वन में जाके कीन्हा ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रगटाए तव केवल ज्ञान॥5॥
चार योजन का समवशरण था, दिव्य देशना दिए महान।
भव्य जीव श्रद्धान जगाए, संयम धारे चरणों आन॥6॥

दोहा– सर्वकर्म का नाशकर, पाए पद निर्वाण।
सुर नरेन्द्र नर चरण में, विशद करें गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– महिमा जिनकी अगम है, अगम है जिनका ज्ञान।
अगम भक्ति करके मिले, जीवों को निर्वाण॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः।

## श्री अरहनाथ पूजन-18

स्थापना (सखी छन्द)

जिनराज अरह कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
आह्वानन् करते भाई, जो हैं शिव सौख्य प्रदायी॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द)

नीर गंगा का निर्मल सुगन्धित लिया,
जिन प्रभू के चरण में समर्पित किया।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**चन्दनादिक से प्रभु के चरण चर्चते,**
**दाह हो नाश भव की प्रभू अर्चते।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**शालि के पुञ्ज से पूजते नाथ को,**
**सुपद अक्षय में हमको प्रभू साथ दो।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**खिले सुरभित सुमन आज आए लिए,**
**शील गुण के हृदय में जलें अब दिए।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**सद्य नैवेद्य लाए यहाँ थाल में,**
**पूजते आत्म तृप्ती हो तत्काल में।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**दीप की ज्योति फैला सुतम वारती,**
**आरती कर वरें ज्ञान की भारती।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**धूप खेते सुगन्धी हो आकाश में,**
**कर्म के नाश करने की हम आस में।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।



**फल चढ़ाते चरण में ये ताजे प्रभो!**
**मोक्ष की आश पूरी हो मेरी विभो।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**आठ द्रव्यों का शुभ अर्घ्य हम यह किए,**
**प्राप्त शाश्वत सुपद हो हमारे लिए।**
**अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,**
**पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

**सुदी फागुन तृतिया शुभकार, गर्भ में आए अरह जिनेश।**
**दिव्य वर्षाए रत्न अपार, धरा पे आके इन्द्र विशेष।।1।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगहन सुदि चतुर्दशी भगवान, जन्म ले किए जगत कल्याण।**
**बजाए भाँति-भाँति के वाद्य, बधाई किए नगर में आन।।2।।**

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जगा जिनके मन में वैराग, त्याग कर चले स्वजन परिवार।**
**रहा ना जिनके मन में राग, दशे सुदि मंगसिर तिथि शुभकार।।3।।**

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुदी कार्तिक द्वादशी महान, प्रभु जी पाए केवल ज्ञान।**
**किए प्रभु जग में ज्ञान प्रकाश, बने तव भक्त चरण के दास।।4।।**

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमावस चैत कृष्ण की खास, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
किए शिवपुर को प्रभू प्रयाण, किया शिवपुर में प्रभु ने वास॥5॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''नाटक कूट'' (अर्घावली)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– तीन पदों के साथ, मुक्त हुए संसार से।
चरण झुकाऊँ माथ, अरहनाथ भगवान को॥

नाटक कूट नाम है भाई, जहाँ से प्रभु ने मुक्ति पाई।
हम भी मुक्ति पाने आए, भक्ति भाव से शीश झुकाए॥
चरणों झुकाकर शीश हम, प्रभु कर रहे हैं अर्चना।
ले द्रव्य आठों थाल में शुभ, कर रहे हैं वंदना॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।
वियोग आपसे हे स्वामी! अब, और सहा न जाता है॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नाटक कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे और निन्यानवे सहस मुनीश।
नौ सौ अरु निन्यानवे मुनि पद, झुका रहे हम अपना शीश॥



नाटक कूट की किए वन्दना, लाख छयानवे का उपवास।
पाते हैं इस जग के प्राणी, पाएँ अन्त में मुक्ती वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि नवनवतिकोडी नवनवति लक्ष नवनवति सहस्र नवनवतिशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ।
गुणमाला गाते-चरण, झुका भाव से माथ॥

(पाईता छन्द)

प्रभु अरहनाथ कहलाए, जो स्वर्ग से चयकर आए।
पितु भूप सुदर्शन जानो, माता मित्रावति मानो॥1॥
है गजपुर नगरी प्यारी, इक्ष्वाकु कुल मनहारी।
स्वर्गो से सुर बालाएँ, जो गर्भ को शोध कराएँ॥2॥
जब गर्भ में प्रभु जी आए, इस जग में मंगल छाए।
जब जन्म प्रभु जी पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए॥3॥
प्रभु राज्य सम्पदा पाए, त्रयपद के धारी गाए।
चक्री के भोग ना भाए, सब छोड़ के दीक्षा पाए॥4॥
आतम का ध्यान लगाए, तब घाती कर्म नशाए।
फिर केवल ज्ञान जगाए, दिव्य ध्वनि आप सुनाए॥5॥
जग को सन्मार्ग दिखाए, मुक्ति श्री जिनवर पाए।
जो रत्नत्रय शुभ पाते, वे मोक्ष महल को जाते॥6॥

दोहा– जिनवर हैं इस लोक में, शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध।
पाए परमान्द जिन, निज आतम कर शुद्ध॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, जिन पूजा की आज।
सुख सम्पति सौभाग्य हो, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

# श्री मल्लिनाथ पूजन-19

स्थापना (चाल छन्द)

**जो मल्लिनाथ को ध्याते, वे विजय मोह पर पाते।**
**आह्वानन करने वाले, होते है जीव निराले।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अर्ध शम्भू छंद)

**निज अनुभव अमृत जल पीकर, त्रिविध ताप का शमन करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**निज गुण का शीतल चंदन पा, भवाताप का हरण करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**मोती सम अक्षय अक्षत यह, श्री जिनेन्द्र के चरण धरें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**जिसके कारण जग में भटके, काम रोग का शमन करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**तन का पोषक क्षुधा रोग है, उसका अब अपहरण करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**विशद ज्ञान का दीप जलाकर, जीवन अपना चमन करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।



**भ्रमण कराया है कर्मों ने, उनका अब हम हनन करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**महा मोक्ष फल पाकर के हम, शिव नगरी को गमन करें।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**पद अनर्घ पाकर के हम भी, निज चेतन को चमन करें।।**
**मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

**चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।**
**धरा पर छाया मंगल कार, देव नर चरण झुकाए शीश।।1।।**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।**
**प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार।।2।।**

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।**
**महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग।।3।।**

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।**
**ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण।।4।।**

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।**
**चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास॥5॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''संबल कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– मल्लिनाथ भगवान, अष्ट कर्म को जीतकर।**
**पाया पद निर्वाण, शिव नगरी में जा बसे॥**
**संवलकूट श्रेष्ठ मन भाया, मल्लिनाथ ने ध्यान लगाया।**
**आठों कर्म नाशकर भाई, अष्ट गुणों की सिद्धि पाई॥**
**सिद्धि प्रभु ने प्राप्त करके, सिद्ध जिन को भी अहा।**
**अर्हन्त पद के साथ में अब, सिद्ध जिन को भी कहा॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।**
**गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्बल कूटेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**कोटि छियानवे मुनी ध्यान कर, किए पूर्णतः कर्म विनाश।**
**अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पाए केवल ज्ञान प्रकाश॥**



**संबल कूट की किए वन्दना, लाख छियानवे का उपवास।**
**पाते हैं इस जग के प्राणी, पाएँ अन्त में मुक्ती वास॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोटि मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– तीन लोक के नाथ जिन, जगती पति जगदीश।**
**गुणगावें सब भाव से, सुर नर पशु के ईश॥**

(अवतार छन्द)

**श्री मल्लिनाथ जिनराज, शिव पदवी पाए।**
**अपराजित से जिनराज, चयकर के आए॥1॥**
**मिथला नगरी के भूप, कुम्भ कहलाए हैं।**
**माँ प्रजावती के गर्भ, में प्रभु आए है॥2॥**
**इक्ष्वाकू नन्दन आप, चिन्ह कलश धारी।**
**है स्वर्ण समान सुदेह,जिनकी मनहारी॥3॥**
**है पच्चिस धनुष महान, तन की ऊँचाई।**
**आयू पचपन हज्जार, वर्ष की शुभगाई॥4॥**
**प्रभु तडित चमकता देख, दीक्षा को धारे।**
**फिर किए आत्म का ध्यान, किए सुर जयकारे॥5॥**
**प्रभु पाए केवल ज्ञान, आतम ध्यान किए।**
**भवि जीवों के हित हेत, देशना आप दिए॥6॥**

**दोहा– कर्म नशाए आपने, भव से पाया पार।**
**भव्य जीव चरणों 'विशद', नमन करें शतबार॥**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– भाते हैं हम भावना, पद में बारम्बार।**
**भक्त बने हम आपके, पाने भव से पार॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन-20

स्थापना (सखी छन्द)

**हैं मुनीव्रतों के धारी, श्री मुनिसुव्रत अविकारी।**
**हम निज उर में तिष्ठाते, पद सादर शीश झुकाते।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सग्विणी छन्द)

**शुद्ध यमुना के जल से ये झारी भरें,**
**नाथ के पाद में तीन धारा करें।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**श्रेष्ठ चन्दन घिसाके कटोरी भरें,**
**नाथ पदाब्ज में चर्च के दुख हरें।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**श्वेत तन्दुल शशी रश्मि सम लाए हैं,**
**नाथ चरणों चढ़ा हम सुख पाए हैं।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**श्रेष्ठ सुरभित सुगन्धित कुसुम ले लिए,**
**जिन प्रभू के चरण आज अर्पण किए।**



**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**सरस ताजे चरू यह बना लाए हैं,**
**क्षुधा व्याधी नशाने को हम आाए है।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**दीप ज्योती जलाई ये हमने अहा,**
**मोह हरना मेरा लक्ष्य अन्तिम रहा।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**धूप घट में सुरभि धूप की यह जले,**
**कर्म निर्मूल हों देह कांति मिले।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

**फल ये ताजे चढ़ाते सरस फल भले,**
**मोक्ष की आश मेरी प्रभु अब फले**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

**आठ द्रव्यों का यह अर्घ्य लाए सही,**
**प्राप्त हो नाथ हमको अब अष्टम मही।**
**मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,**
**स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

**सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।**
**माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥**

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।**
**इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।**
**घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥3॥**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।**
**जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥4॥**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फागुन वदि दशमी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।**
**कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''निर्जर कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**

**सोरठा– मुनिसुव्रत भगवान, मुक्त हुए हैं कर्म से।**
**निर्जर कूट महान्, भक्ति करते भाव से॥**



**तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।**
**नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नंदन॥**
**मुनिव्रतधारी हे भवतारी! योगीश्वर! जिनवर वंदन।**
**हम शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं प्रभु का अर्चन।**
**हे जिनेन्द्र! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।**
**अब चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।**
**कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री निर्जर कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**निन्यानवे कोटा-कोटी मुनिवर, कोटि निन्यानवे करके ध्यान।**
**लाख निन्यानवे नौ सौ निन्यानवे, कर्म नाश पाए निर्वाण॥**
**एक कोटि उपवासों का फल, किए वन्दना होवे प्राप्त।**
**आत्म ध्यान कर जग के प्राणी, स्वयं शीघ्र बन जाते आप्त॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्रादि नवनवति कोडाकोडी नवनवति कोडी नवनवति लक्ष नवशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।**
**भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल॥**

(नरेन्द्र छन्द)

**प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।**
**राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए॥1॥**
**नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई॥**
**गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥**

तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्का पात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥

दोहा– अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मुनिसुव्रत भगवान का, जपे निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावे वह शिव धाम॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

## श्री नमिनाथ जिन पूजन-21

स्थापना (सखी छन्द)

जो जिनवर नमि को ध्याते, अपने उर में तिष्ठाते।
वे होते मुक्ती गामी, बनते हैं श्री के स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

साम्य सुधारस पाने जल यह, निर्मल चरण चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।



भव संताप निवारण हेतू, चरणों गंध चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद अखण्ड पाने हे स्वामी, अक्षत धवल चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभि स्वात्म गुण को पाने हम, सुरभित सुमन-चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन करने को, यह नैवेद्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह नाश कर ज्ञान जगाने, जगमग दीप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्म जाल हम पूर्ण जलाने, सुरभित धूप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण अतिन्द्रिय सुख फल पाने, फल यह सरस चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य शाश्वत पाने हम, अतिशय अर्घ्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**आश्विन वदि द्वितिया जानो, गर्भागम मंगल मानो।**
**सुर रत्न श्रेष्ठ वर्षाए, शुभ गर्भ कल्याण मनाए॥1॥**

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशमी अषाढ़ वदि गाई, जन्मे नमि मंगल दाई।**
**शत इन्द्र शरण में आए, जो जन्म कल्याण मनाए॥2॥**

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशमी आषाढ़ वदि स्वामी, दीक्षा धारे शिवगामी।**
**मन में वैराग्य जगाए, वन में जा ध्यान लगाए॥3॥**

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मगसिर सुदि ग्यारस पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।**
**सुर समवशरण बनवाए, उपदेश जीव तब पाए॥4॥**

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चौदश वैशाख की गायी, मुक्ती पाए जिन भाई।**
**अपने सब कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥**

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''मित्रधर कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**

**सोरठा– नमिनाथ भगवान, श्रेष्ठ मित्रधर कूट से।**
**पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए हैं कर्म से॥**



**नीलकमल लक्षण के धारी, नमिनाथ जिन मंगलकारी।**
**प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे॥**
**होकर प्रकाशी ज्ञान के, उपदेश दे सद्ज्ञान का।**
**मारग बताया आपने, संसार को कल्याण का॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।**
**निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान॥**
**चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं मित्रधर कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**एक अरब नौ कोटा-कोटी, लाख पैंतालिस सात हजार।**
**नौ सौ ब्यालिस अधिक बताए, हुए मुनीश्वर भव से पार॥**
**कूट मित्रधर के वन्दन से, एक कोटि का फल उपवास।**
**रत्नत्रय के धारी पाते, इसी कूट से मुक्ती वास॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नव शतक कोडाकोडी एक अरब पंचचत्वारिंशत् लक्षसप्तसहस्र द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– चेतन गुण में लीन नित, रहते नमि जिनराज।**
**जयमाला गाए चरण, मिलकर सकल समाज॥**

(रोला छन्द)

**अपराजित से नाथ, चयकर भूपर आये।**
**मिथला नगरी को आकर, के धन्य बनाए॥1॥**
**विजय राज पितु जान, इक्ष्वाकु वंश कहाए।**
**मात वप्रिला नाथ, चिन्ह कमल सित पाए॥2॥**

आयू दश हज्जार वर्ष, की पाए स्वामी।
साठ हाथ का उच्च, तन पाए शिवगामी॥3॥
जातिस्मरण कर प्राप्त, प्रभु वैराग्य जगाए।
लक्षण सहसरु आठ, देह में प्रभु प्रगटाये॥4॥
सहस भूप जिनराज, के संग दीक्षा पाए।
घाती कर्म विनाश, केवल ज्ञान जगाए॥5॥
गणधर सत्रह श्रेष्ठ, सुप्रभ प्रथम कहाए॥
करके कर्म विनाश, नमि जिन मुक्ती पाए॥6॥

दोहा– तीर्थराज सम्मेदगिर, कूट मित्र धर जान।
जिन प्रभु भक्ती पाए हैं, रहे हृदय में ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नमीनाथ भगवान के, गुण हैं उपमातीत।
भक्त मुक्ति पावे 'विशद', धारें गुण में प्रीत॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

## श्री नेमिनाथ पूजन-22

स्थापना (सखी छन्द)

जिनको जग भोगना भाए, वे मुक्ती पथ अपनाए।
हे नेमिनाथ जगनामी, आह्वानन् करते स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

प्रभु के चरण तीन धारा कराएँ,
सभी पाप मल धोके पावन कहाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।



कपूरादि चंदन महागंध लाए,
परम मोक्ष गामी की पूजा को आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

धुले शालि तन्दुल धरे पुञ्ज आगे,
निजानन्द पाएँ सभी शोक भागें
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुगंधित सुमन ले बनाई ये माला,
चढ़ाते चरण काम को मार डाला।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस मिष्ठ नैवेद्य ताजे बनाएँ,
प्रभू पूजते भूख व्याधी नशाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जले ज्योति कर्पूर की ध्वांत नाशें,
करें आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशें।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुगन्धित सुरभि धूप खेते अगनि में,
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री फलादि ताजे ये चरणों चढ़ाएँ,**
**मिले मोक्ष फल नाथ शिव सौख्य पाएँ**
**श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,**
**लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**उदक गंध आदिक मिला अर्घ्य लाए,**
**सुपद श्रेष्ठ शाश्वत प्रभू पाते आए।**
**श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,**
**लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

**भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।**
**कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥1॥**

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।**
**भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥2॥**

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।**
**पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥3॥**

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।**
**शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥4॥**

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।**
**नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥5॥**

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घावली)

**श्री गिरनार गिरि की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– गिरि गिरनार महान्, ऊर्जयन्त भी नाम है।**
**पाए पद निर्वाण, काल दोष से नेमि जिन॥**
**नेमिनाथ के चरण कमल में, भव्य जीव आ पाते हैं।**
**तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं॥**
**गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।**
**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं॥**
**राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।**
**हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नेमिनानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**हे नेमिनाथ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।**
**जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री ऊर्जयंत सिद्धक्षेत्रभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

**चरण युगल त्रय रहे मनोहर, अजितनाथ की कूट के पास।**
**अनिरुद्ध शम्भु प्रद्युम्न कृष्णसुत, कीन्हे अपने कर्म विनाश॥**
**उर्जयन्त से नेमिनाथ जी, कोटि बहत्तर मुनि के साथ।**
**मुक्ती पाए जिनके चरणों, झुका रहे हम पद में माथ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र शंबू प्रद्युम्नकुमारादि द्वासप्ताति कोडी सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।**
**नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल॥**

(तोटक छन्द)

**जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।**
**जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन॥1॥**
**अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।**
**सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान॥2॥**
**ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।**
**है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान॥3॥**
**जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।**
**झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़॥4॥**
**कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार॥**
**फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान॥5॥**
**तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।**
**फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास॥6॥**

**दोहा– भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।**
**वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष॥**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।**
**मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत॥**

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

**जाप्य–ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

# श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन-23

स्थापना (सखी छन्द)

**उपसर्गों पर जय पाए, वह पार्श्वनाथ कहलाए।**
**जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वान को आए॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।



(शम्भू छन्द)

**क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥1॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥4॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥5॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥6॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

**कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥7॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।**
**पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

**वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।**
**चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण॥1॥**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।**
**सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ॥2॥**

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।**
**संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार॥3॥**

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।**
**समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान॥4॥**

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।**
**कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण॥5॥**

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ''स्वर्णभद्र कूट'' (अर्घावली)

**श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– कमठ किया उपसर्ग, बैर जानकर पूर्व का।**
**पाए जिन अपवर्ग, कर्म नाशकर ध्यान से॥**



**पावन तीर्थराज है भूपर, गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर।**
**सबसे ऊँची टोंक रही है, महिमा जिसकी अगम कही है॥**
**महिमा अगम है जिन प्रभु की, तीर्थ की भी जानिए।**
**जो दुःखहर्ता सौख्यकर्त्ता, मोक्षदायी मानिए॥**
**हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।**
**है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपसर्गों में संघर्षों में, तुमने समता को धारा है।**
**कर्मों का शत्रु दल आगे, हे पार्श्व! आपके हारा है॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णभद्र कूटेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोटि ब्यासी लाख चुरासी, मुनिवर पैंतालिस हज्जार।**
**सात सौ ब्यालिस मुनी कर्म का, नाश किए पाए भव पार॥**
**सोलह कोटि उपवासों का, फल पाते हैं इस जग के जीव।**
**किए वन्दना जिन चरणों की, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि द्वयशीति कोडी चतुरशीति लक्ष पंचचत्वारिंशत् सप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा– ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।**
**गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग॥**

(राधेश्याम छन्द)

**इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।**
**जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं॥1॥**

जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी॥2॥
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं॥3॥
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते है॥4॥
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है॥5॥
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं॥6॥

दोहा– यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार॥

*॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

## श्री महावीर पूजन–24

हैं वीतराग धारी, श्री महावीर अनगारी।
निज उर में हम तिष्ठाते, जिन पद में शीश झुकाते।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लक्ष्मीधरा-छन्द)

तीर्थवारी से यह स्वच्छ झारी भरें,
तीर्थ कर्तार के पाद धारा करें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।



स्वर्ण के सदृश यह गंध हम लाए हैं,
राग की दाह को मैटने आए हैं।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सूर्य रश्मी सदृश श्वेत अक्षत किए,
आत्म निधि प्राप्त हो पुञ्ज आए लिए
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित कुसुम थाल में भर लिए,
काम व्याधी हमारी प्रभू नाशिए।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस चरु यह बना लाए हैं थाल में,
क्षुधा व्याधी हरो नाथ पूजें तुम्हें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

कर रहे नाथ चरणों में हम आरती,
चित्त में अब जगे ज्ञान की भारती।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप सुरभित प्रभू अग्नि में खेवते,
कर्म शत्रू जलें आप पद सेवते।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल से पूजा रचाते हृदय मम खिले,**
**नाथ पद पूजते सर्व सिद्धी मिले।**
**वीर के पाद पूजा किए मन खिले,**
**अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥8॥**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,**
**शीघ्र शिवसुन्दरी नाथ हम भी वरें।**
**वीर के पाद पूजा किए मन खिले,**
**अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

**षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।**
**चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली॥1॥**

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी आई।**
**प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए॥2॥**

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।**
**मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया॥3॥**

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।**
**सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ॥4॥**

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।**
**कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥**

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घावली)

**श्री पावापुर क्षेत्र की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।**
**उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥**
**सोरठा– पाए पद निर्वाण, पद्म सरोवर से प्रभु।**
**महावीर भगवान, काल दोष यह मानिए॥**
**हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।**
**यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।**
**तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।**
**हम भक्ति भाव से हे भगवन्! यह भाव सुमन कर में लाए।**
**हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।**
**शुभ अर्घ्य समर्पित करते हैं, यह भक्त खड़े अरदास लिए।**
**चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।**
**कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥**

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।**
**प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्‌गद्‌ होकर हर्षाया है॥**
**हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥**

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतिनाथ का कूँट जहाँ है, कूट वीर का उसके पास।**
**ध्यान साधना करके पाए, कई मुनीश्वर मुक्ती वास॥**
**पावापुर के पदम सरोवर, से छत्तीस मुनियों के साथ।**
**मुक्ती पाए जिनके चरणों, झुका रहे हम अपना माथ॥3॥**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि छत्तीस मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर।।

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभू जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं।।1।।
पाए प्रभू जी गर्भ अन्तिम, मात त्रिशला जानिए।
जिन मात देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए।।2।।
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, न्हवन मेरू पर किए।
शत् इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए।।3।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, महावीर जिनवर पाएँ हैं।।4।।
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम 'विशद' अपनाए हैं।।5।।
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।।6।।

दोहा– ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।
सम्यकदर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध।।

*।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।*

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

*इंसान का जीवन क्या? एक सुन्दर सी लोरी है।*
*सम्पूर्ण प्रेक्टीकल नहीं मात्र थोड़ी सी थ्योरी है।।*
*गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास कहावत पुरानी है।*
*गिरगिट की भांति रूप बदलना इंसान की कमजोरी है।।*



# गौतम गणधर कूट

तीन कोस गिरि पर चढ़ते ही, गौतम गणधर का है कूट।
दर्श किए जिन चरण कमल के, जाते कर्म स्वयं ही छूट।।
गौतम गणधर महावीर के, प्रथम हुए कर कर्म विनाश।
जिनके चरण कमल की पूजा, से होती है पूरी आस।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर कूटेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर के पावन, ऋषभसेन आदिक गणराज।
चौदह सौ बावन बतलाए, पाने वाले शिव का ताज।।
शिखर युक्त मंदिर है सुन्दर, जिसमें सोहें धवल चरण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजा करते, मिटे शीघ्र ही जन्म मरण।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभसेनादि सर्व गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे वेद के ज्ञाता गौतम, मिथ्यावश जग भ्रमण किया।
मानस्तंभ का दर्शन करके, सम्यक् दर्शन ग्रहण किया।।
महावीर के गणधर बनकर, झेले दिव्य देशना नाथ।
कर्मनाश कर मुक्ती पाए, जिनपद झुका रहे हम माथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## सम्मेद शिखर की तलहटी स्थित जिनालयों के अर्घ्यं

कल्याण निकेतन पार्श्व नाथ का, मन्दिर अतिशयकारी है।
रहे बहत्तर जहाँ जिनालय, शिखर श्रेष्ठ मनिहारी है।।
ऋषभ नाथ जिन पार्श्वनाथ जी, संग्रहालय में है शुभकार।
पार्श्व चन्द्र एवं सन्मति के, आश्रम में मन्दिर द्वय सार।।1।।

ॐ ह्रीं कल्याणनिकेतनादि जिनालयस्थित सर्व जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रती आश्रम में पार्श्वनाथ जिन और शांति जिन मंगलकार।
है त्रियोग आश्रम में जिनगृह, जिन पद वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वशान्तिनाथ जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरहपंथी कोठी में जिन, चन्द्र प्रभू जी आभावान।
सुविधि पार्श्व अरु अजितशांति जिन, का हम करते हैं गुणगान।।

सहसकूट नन्दीश्वर मंदिर, चौबीसी दो नेमीनाथ।
पार्श्व चन्द्र दो गन्ध कुटी में, मानस्तंभ पूजते साथ॥
चार जिनालय कटक विराजे, शांतिनाथ मंदिर पावन।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, भाव सहित जो मन भावन॥3॥

ॐ ह्रीं तेरहपन्थी कोठीस्थित सर्व जिनालयेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस पंथी कोठी में पावन, आदि शांति हैं पारसनाथ।
पार्श्व शांति जिन पुष्पदन्त अरु, आदिनाथ को जोड़े हाथ॥
मानस्तम्भ जिन पार्श्वनाथ हैं, पार्श्वनाथ अरु बाहुबली।
पूजा करते श्री जिनपद की, पाने को हम सौख्य गली॥4॥

ॐ ह्रीं श्री बीसपन्थी कोठी स्थित सर्व जिनालयेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस पंथी कोठी के सम्मुख, मध्य लोक रचना शुभकार।
पार्श्वनाथ उत्तुंग बाहुबली, चौबीसी भी मंगलकार॥
समवशरण के मन्दिर ऊपर, भूत चौबीसी रही महान।
तीस चौबीसी जिन मंदिर का, भी हम करते हैं गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकादि जिनालयस्थित सर्व जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बने तलहटी में जिन मंदिर, श्री जिनेन्द्र के जो स्थान।
जिन मुनियों की हैं समाधियाँ, उनका भी करते गुणगान॥
आचार्योपाध्याय सर्व साधु जो, करें साधना वहाँ महान।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते जयगान॥6॥

ॐ ह्रीं तलहटी स्थित सर्व जिनालयस्थित जिनबिम्ब एवं सर्व मुनि चरणेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल सिन्धु वात्सल्य रत्नाकर, गाए इस युग के ऋषिराज।
दुख हर्त्ता जन जन के स्वामी, तारण तरण कहाए जहाज॥
बना समाधी मंदिर पावन, भक्त करें जाके गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, गुरु पद में ये महति महान॥7॥

ॐ ह्रीं विमल परिसर जिनालयस्थित सर्व जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

कुण्ड चौपड़ा में रहे, पार्श्वनाथ जिन वीर।
बाहुबली पद पूजते, मिट जाए भव पीर॥8॥

ॐ ह्रीं चौपडाकुंडस्थित श्री पार्श्वनाथ सर्व जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।



**समुच्चय जाप्य**– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रभ्यो नमः।

# समुच्चय जयमाला

दोहा– सम्मेदाचल तीर्थ अरु, तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
जयमाला गाते विशद, जिनकी यहाँ महान॥

कण-कण पावन जिसका सारा, मंगलमय है तीर्थ हमारा।
श्री सम्मेद शिखर है प्यारा, सब मिलकर बोलो जयकारा।टेक॥

सब मिल दर्शन करवा जी, भाव से वंदन करवा जी।
यह अनादि है तीर्थ जहाँ पर, मोक्ष गये है बीस जिनेश्वर।
संख्यातीत यहाँ से मुनिवर, मुक्ती पाए कर्म नाशकर।
जन्म मरण से हो छुटकारा, सब मिलकर बोलो जयकारा॥
जो भी वंदन करने जाते, भूत प्रेत उनसे घबड़ाते।
मन वांछित फल प्राणी पाते, उनके सब संकट कट जाते।
अशुभ गति न होय दुबारा, सब मिल...॥
भव्यों को दर्शन मिलते हैं, जीवन के उपवन खिलते हैं।
भाव सहित वंदन करते हैं, चरणों का अर्चन करते हैं॥
पाप मिटे वंदन के द्वारा, सब मिल...॥
सुर नर मुनि गणधर भी आते, अपना सद सौभाग्य जगाते।
सिद्ध क्षेत्र पर ध्यान लगाते, सर्व सिद्धियाँ वह पा जाते॥
गूँजे जैन धर्म का नारा, सब मिल....॥
सिद्ध सुखों के सुर अभिलाषी, जिनकी चिर आकांक्षा प्यासी।
बिखरी छटा जहाँ मनहारी, जीवों को हैं मंगलकारी॥
वातावरण सुखद है सारा, सब मिल...॥
संयम का सौभाग्य जगाते, मानव सकल व्रतों को पाते।
निज आतम का ध्यान लगाते, श्रावक श्रद्धा ज्ञान जगाते।
भव सागर से हो निस्तारा, सब मिल...॥
आओ मिलकर सब जन आओ, वंदन करके पुण्य कमाओ।
जिन सिद्धोंको हम सब ध्याएँ, हम भी सिद्ध स्वयं बन जाएँ।
नहीं और है कोई चारा, सब मिल...॥

इन्द्र देव ने स्वयं उतरकर, चरण उकेरे हैं पर्वत पर।
अतिशयकारी पुण्य कमाया, जिनकी महिमा को दिखलाया॥
महिमा प्रभु की अपरंपारा, सब मिल...॥
जो यात्री वंदन को आते, त्याग हेतु प्रेरित हो जाते।
पद चिन्हों का वंदन पाते, अपने सारे दोष नशाते॥
मंगलमय जीवन हो सारा, सब मिल...॥
कल-कल बहता शीतल नाला, अतिशयकारी महिमा वाला।
चारों तरफ रहे हरियाली, वायु चलती है मतवाली॥
भक्त बोलते हैं जयकारा, सब मिल...॥
सांवलिया पारस की जय हो, सारे कर्मों का भी क्षय हो।
डोली वाले देते नारे, बोल रहे हैं जय-जयकारे॥
गूंज रहा है पर्वत सारा, सब मिल...॥
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, जैन धर्म परिकर की जय हो।
दुखहारी गिरवर की जय हो, श्री सम्मेद शिखर की जय हो॥
मुक्ति पाना लक्ष्य हमारा, सब मिल...॥
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चम्पापुर मानो।
नेमिनाथ गिरनार सिधाएँ, वीर प्रभु पावापुर गाए॥
मोक्ष महल पाए हैं प्यारा, सब मिल...॥

*छंद-घत्तानंद*

**है पूज्य हमारा, पर्वत सारा, सम्मेदाचल तीर्थ महा।**
**कण-कण है पावन अतिमन भावन, हम पूज रहे हैं नाथ अहा।**

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– रज कण पूजें देव नर, भक्तिभाव के साथ।
भव्य भावना से 'विशद', झुका रहे हैं माथ॥

*पुष्पांजलिं क्षिपेत्*



# श्री सम्मेदशिखर की आरती

तर्ज – आनन्द अपार है............

भक्ति का प्रसार है, महिमा अपरम्पार है।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत की, हो रही जय-जयकार है।।टेक॥
दूर-दूर से भक्त यहाँ पर, वन्दन करने आते हैं।-2
तीर्थ वन्दना करने वाले, जय-जयकार लगाते हैं।-2
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की बन्धु, महिमा का न पार है॥
श्री सम्मेद..............................॥1॥

बीस जिनेश्वर इस चौबीसी, के शिव पदवी पाए हैं।-2
कर्म नाशकर अन्य मुनीश्वर, शिवपुर धाम बनाए हैं।-2
शाश्वत तीर्थराज मुक्ती का, मानो अनुपम द्वार है॥
श्री सम्मेद..............................॥2॥

जीव अनन्तानन्त यहाँ से, आगे मुक्ती पाएँगे।-2
हम भी उनके साथ में बन्धु, सिद्ध शिला पर जाएँगे।-2
स्वप्न सजाते हैं ऐसा जो, हो जाता साकार है॥
श्री सम्मेद..............................॥3॥

भाव सहित वन्दन करने से, नरक पशु गति नश जाए।-2
दुष्कृत अल्प आयु भी, वह प्राणी फिर ना पाए।-2
जन-जन के जीवन में गिरि का, 'विशद' बड़ा उपकार है॥
श्री सम्मेद..............................॥4॥

तीर्थ वन्दना करने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।-2
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य जगाए हैं।-2
'विशद' आत्मा का हमको भी, करना अब उद्धार है॥
श्री सम्मेद..............................॥5॥

# निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।।
करूँ आरती...............................
भव-भव के दु:ख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
करूँ आरती...............................
अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।।
करूँ आरती...............................
ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की।।
करूँ आरती...............................
संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर प्रद्म की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।।
करूँ आरती...............................
ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।।
करूँ आरती...............................
कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।।
करूँ आरती...............................
कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुबीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।।
करूँ आरती...............................
चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।।
करूँ आरती...............................



# श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान।।
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण।।

*(चौपाई)*

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।
संत यहाँ आकर तप कीन्हें, निज चेतन में चित्त जो दीन्हें।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।
द्वितीय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।

कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो॥
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते॥
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे॥
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए॥
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी॥
पक्षी भी तन्मय हो जाते मानो प्रभु की महिमा गाते।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, जीवन सफल बनाने वाले॥
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते॥
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें॥
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।
देव वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें॥
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।
कभी स्वान बनकर आ जाते, डोली वाले बनकर आते॥
गिरवर तुमरी बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।
तुमरे गुण सारा जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए॥
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा॥
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता॥
तुमरी धूल लगाकर माथे, भाव सहित तव गाथा गाते।
मेरी पार लगाओ नैया, भव-सिन्धु के आप खिवैया॥
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए॥



दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीसा।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश॥
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार॥

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

# निर्वाण काण्ड

दोहा– वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
विशद काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज॥

*(शम्भू छंद)*

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम॥
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश॥
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण॥
कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरि पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार॥
रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान॥
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण॥
श्री भलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम साथ॥
राम हनू सुग्रीव नील अरु गय गवाख्य महानील सुडील।
कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील॥
नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज॥
रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।

साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार॥
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ॥
अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार॥
वंशस्थल के पश्चित दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण॥
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण॥
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश॥
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण॥
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार॥
पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्परा।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि, शिवपद का पाए हैं सार॥
फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।
गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण॥
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।
अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ॥
पार्श्वनाथ जिनवर नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम॥
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान॥
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिक्षेत्र में प्रभु जी पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ॥
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रही महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान॥
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष॥
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।



गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव॥
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।
शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान॥
तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें महान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण॥

*(अञ्चलिका)*

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग॥
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ महा इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष॥
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत॥
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन॥
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प धरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान॥
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन॥
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, का करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन॥
दु:ख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण॥

*इति*

---

## प्रशस्ति

–ue%fl)sH;%Jhewyla?ksdbUnqdqUnkEuk;scykRdkjx.kslsuxPNsUuhla?kL;
ijEijk;ka.Jhvkfnlkxjkpk;ZtkrkLrr~f"k";%JhegkohjdhfrZvkpk;Z
tkrkLrr~f"k";k%JhfoeylkxjkpkZ;kZtkrkLrrf"k";JhHkjrlkxjkpk;Z
Jhfojkxlkxjkpk;kZtkrkLrr~f"k";vkpk;Zfo'knlkxjkpk;ZtEcw}his
Hkjr{ks=ksvk;Z[k.MsHkkjrns'ksfnYyhizkUrs]jksfg.khlSDVj&3fLFkr
Jhik'oZukFkfnxEcjtSueafnjeè;svoljsfudkZ.klEor~2540fo-la-2071
ek?kekls'kqDyi{ksiapeheaxydkljsJhlEesnf"k[kjpkSchlhfudkZ.k{ks=k
foèkkujpuklekfIrbfr'kqHkaHkw;kr~A

# प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

**पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।**
**श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं।।**
**गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।**
**मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।**
**रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।**
**भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।**
**कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।**
**संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।**
**अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।**
**अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।**
**तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।**
**काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वशंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।



**काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।**
**खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।**
**क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।**
**विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।**
**मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।**
**पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।**
**आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।**
**पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।**
**मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।**
**महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।**
**पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।**

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
**मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥**

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
**मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥**

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)



## आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

# प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

**नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्यार्जन करें।**